mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-351 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

22 दिसंबर 2024 रविवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

तेंदुलकर ने गांव की... @ पेज 7

'भारत और कुवैत का रिश्ता सभ्यताओं, सागर और स्नेह का है'

कुवैत सिटी (एजेंसी)। पीएम मोदी ने कुवैत में भारतीय समुदाय के लोगों हाला मोदी कार्यक्रम में को शनिवार को संबोधित किया। उन्होंने सबसे पहले भारतीयों का अभिवादन किया और कहा कि

● कुवैत में भारतीयों को पीएम मोदी ने किया संबोधित

मेरे सामने यहां मिनी हिंदुस्तान उमड़ आया है। पीएम मोदी ने कहा कि यहां भारत के हर क्षेत्रों के लोग आए हुए हैं। उन्होंने कहा कि कुवैत में 43 साल बाद कोई भारतीय प्रधानमंत्री भारत से आया है। आपने कुवैत में भारत का रंग भरा है। आपने कुवेत में टैलेंट, टेक्नालोजी और ट्रेडिशन का मसाला मिक्स किया है। मैं यहां सिर्फ आपसे मिलने नहीं, बल्कि आपकी उपलब्धियों को सेलिब्रेट करने आया हूं।

पीएम मोदी ने कहा कि कुछ देर पहले मेरी यहां भारतीय कामगारों से मुलाकात हुई। यहां के मजदूर, डॉक्टर, नर्सेज सभी अपना योगदान दे रहे हैं। आपमें से जो टीचर्स हैं, वह कुवैत की अगली पीढ़ी का निर्माण कर रहे। जो इंजीनियर्स हैं वह कुवैत के नए इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण कर रहे। जब भी मैं कुवैत की लीडरशिप से बात करता हूं तो वह आप सभी की बहुत प्रशंसा करते हैं। कुवैत के नागरिक भी आपकी मेहनत, ईमानदारी और कुशलता की वजह से आपका बहुत मान करते हैं। आज भारत कई मामले में दुनिया में सबसे आगे है। इसका बहुत बड़ा श्रेय भी आप सभी मेहनतकश साथियों को जाता है।

देशवासी भी आपके इस योगदान का सम्मान करते हैं। साथियों भारत और कुवैत का रिश्ता सभ्यताओं का है, सागर का है, स्नेह का है, व्यापार और कारोबार का है। भारत और कुवैत अरब सागर के दो किनारों पर बसे सिर्फ दो डिप्लोमैसी ने ही नहीं, बल्कि दिलों ने आपस में जोड़ा है। हमारा वर्तमान ही नहीं, हमारा अतीत भी हमें जोड़ता है। एक समय था जब कुवैत से मोती, खजूर और शानदार नस्ल के घोड़े भारत जाते थे। भारत से भी बहुत सारा सामान यहां आता रहा है। भारत के चावल, चाय, मसाले, कपाड़े, लकड़ी यहां आती थी।

भारत और कुवैत का पुराना व्यापारिक रिश्ता: सूरत कुवैत के मोतियों के लिए पहले अंतरराष्ट्रीय मार्केट हुआ करता था। गुजरात के बंदरगाह कुवैत के साथ पुराने संबंधों के साक्षी हैं। कुवैती व्यापारियों ने गुजराती भाषा में अनेक किताबें पब्लिश की हैं। गुजरात के बाद कुवैत के व्यापारियों ने मुंबई समेत दूसरे शहरों में पहचान बनाई। अब्दुल लतीफ की किताब मुंबई में छपी थी। कुवैत के बहुत से व्यापारी, मुंबई, गोवा आदि जगहों पर अपने दफ्तर खोले हैं। कुवैत के बहुत सारे परिवार आज भी मुंबई के मोहम्मद अली पीठ में रहते हैं। साठ से 65 साल पहले कुवैत में भारतीय रुपये और पैसे चलते थे। यहां किसी दुकान से कुछ खरीदने पर रुपये ही स्वीकार किए जाते थे।

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम में बड़ा आतंकवादी हमला

पेशावर (एजेंसी)। दुनिया भर में आतंकवाद फैलाने वाला पाकिस्तान अब खुद ही इससे जूझ रहा है। उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में बड़ा आतंकवादी हमला हुआ है। यह हमला शनिवार तड़के एक सुरक्षा चौकी पर हुआ। आतंकवादियों की ओर से किए गए

इस भीषण हमले में 16 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए हैं। जबकि आठ अन्य घायल हो गए। पाकिस्तान के सुरक्षा सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि आतंकवादियों ने अफगानिस्तान की सीमा से लगे दक्षिणी वजीरिस्तान जिले के माकेन में लिटा सार चेक पोस्ट पर हमला किया। यहां पर पाकिस्तान सैनिकों की मौजूदगी थी। इस हमले में 16 सैनिकों की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि यह पिछले कुछ महीनों में सुरक्षा बलों पर हुआ सबसे बड़ा आतंकवादी हमला है। उत्तर पश्चिम पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में यह आतंकवादी हमला ऐसे वक्त में हुआ है, जब कुछ दिनों पहले पाकिस्तानी सुरक्षा बलों ने इसी जिले के सररोघा इलाके में खुफिया जानकारी पर आधारित एक एंटी टेररिस्ट अभियान में दो आतंकवादियों को मार गिराया था। ऐसे में माना जा रहा है कि पाकिस्तानी सुरक्षा बलों पर किया गया यह हमला आतंकवादियों की ओर से बदले की कार्रवाई हो सकती है।

ट्रंप को शामिल किए बिना अमेरिकी संसद में पास हुआ वित्तपोषण विधेयक

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के ऊपरी सदन सीनेट ने संघीय सरकार के संचालन एवं आपदा सहायता को अस्थायी रूप से वित्तपोषण मुहैया कराने की एक द्विदलीय योजना को शनिवार को पारित कर दिया। इस विधेयक में नए साल में ऋण सीमा बढ़ाने की अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मांग को शामिल नहीं किया गया है। यदि यह विधेयक तय समयसीमा पर पारित नहीं होता तो इससे सरकारी कामकाज बाधित होने का खतरा था।

निचले सदन प्रतिनिधि सभा के स्पीकर माइक जॉनसन ने जोर देकर कहा था कि संसद ''अपने दायित्वों को पूरा करेगी'' और क्रिसमस की छुट्टियों से पहले संघीय सरकार का कामकाज बाधित नहीं होने देगी। बहरहाल, ट्रंप ने इस बात पर जोर दिया था कि विधेयक में ऋण सीमा में वृद्धि को शामिल किया जाना चाहिए और उन्होंने सुबह एक 'पोस्ट' में कहा था कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो कामकाज ''अभी बंद हो'' जाना चाहिए।

भोपाल में दिनदहाड़े किडनैपिंग, लड़की को उठाकर हो गए फरार

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। भोपाल के छोला इलाके में दिनदहाड़े एक लड़की को किडनैप कर लिया गया। ये किडनैपिंग लड़की के घर के अंदर घुस कर की गई है। ये मामला छोला थाना क्षेत्र का है। पुलिस ने आरोपियों को पकड़ने के लिए जांच दल का गठन किया है।

ऑटो के पीछे भागते और चिल्लाते नजर आए परिजन: पुलिस ने बताया कि घर के अंदर से किडनैप हुई लड़की की उम्र 22 साल है। आरोपी युवक ऑटो से आए हुए थे। ऑटो खड़ा करके एक शख्स घर के अंदर घुसा और जबरन लड़की को बैठा कर वहां से निकल गया। इसके बाद घर के अंदर से लड़की के परिजन ऑटो की ओर भागते और चीखते-चिल्लाते नजर आए।

तीन महीने पहले युवती की हुई थी सगाई: पुलिस ने मामले की और अधिक जानकारी देते हुए कहा कि छोला थाना के भानपुरा इलाके में रहने वाली युवती की तीन महीने पहले इमरान नाम के युवक के साथ सगाई हुई थी। बाद में युवक का अपराधिक रिकॉर्ड देखकर लड़की के परिजनों ने सगाई तोड़ दी थी। पुलिस का मानना है कि शायद इसी बात से नाराज होकर शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद इमरान अपने सहयोगियों के साथ युवती के घर पहुंचा और उसे जबरदस्ती ऑटो में बैठाकर ले गया। इस घटना का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है।

हिल स्टेशन जैसा दिखेगा महाकुम्भ का नजारा

प्रयागराज में बनेगी देश की पहली डोम सिटी

प्रयागराज (एजेंसी)। धर्मनगरी प्रयागराज में महाकुम्भ को लेकर तैयारी जोर-शोर से की जा रही है। इसके अलावा यहां देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए हर सुविधा का खयाल रखा जा रहा है। श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की समस्या न हो इसे ध्यान में रखकर कई प्रकार की सुविधाएं दी जा रही हैं। इस बीच आस्था के सबसे बड़े समागम महाकुम्भ में पहली बार आगंतुकों को डोम सिटी में रहने का आनंद मिलेगा। महाकुम्भ नगर के अरैल क्षेत्र में तैयार हो रही डोम सिटी में ठहर कर श्रद्धालु हिल स्टेशन की अनुभूति कर सकेंगे। यह डोम सिटी, पर्यटन विभाग के सहयोग से एक निजी कंपनी तैयार कर रही है।

कंपनी के निदेशक अमित जौहरी का कहना है कि पर्यटन विभाग की तरफ से सवा तीन हेक्टेयर जमीन कंपनी को मिली है, जिसमें 51 करोड़ रुपये की लागत से देश की पहली डोम सिटी तैयार की जा रही है। अमित जौहरी के मुताबिक, 15 से 18 फीट की ऊंचाई पर स्थापित की जा रही इस डोम

सिटी में 360 डिग्री पोली कार्बन शीट के कुल 44 डोम बनाए जा रहे हैं। ये पूरी तरह बुलेट प्रूफ और फायर प्रूफ हैं। पर्यटक इसमें अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ 24 घंटे रहकर कुम्भ का नजारा देख सकते हैं। इसका अनुभव किसी हिल स्टेशन से महाकुम्भ का अवलोकन करने जैसा है।

एक लाख से ऊपर तक हो सकता है किराया: अमित जौहरी ने बताया कि इस पूरी डोम सिटी में 176 कॉटेज भी बनाए जा रहे हैं, जहां ठहरने की सभी अत्याधुनिक सुविधाएं मौजूद रहेंगी। हर एक कॉटेज में एसी, गीजर और सात्विक आहार की व्यवस्था होगी। कॉटेज का किराया स्नान पर्व के दिन 81,000 रुपये प्रतिदिन और सामान्य दिनों में 41,000 रुपये प्रतिदिन होगा। इसी तरह डोम का किराया स्नान पर्व के दिन 1.10 लाख रुपये प्रतिदिन और सामान्य दिनों में 81,000 रुपये प्रतिदिन निर्धारित किया गया है। डोम की ऑनलाइन बुकिंग शुरू हो चुकी है। कॉटेज के वातावरण को आध्यात्मिक बनाने के लिए यहां धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन की भी व्यवस्था होगी।

12वीं तक मुफ्त शिक्षा और फ्री में कोचिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। बाबा साहेब के सम्मान में दिल्लीवासियों के लिए आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने बड़ी घोषणा की है। दलित समाज के बच्चों की अब विदेशों में पढ़ाई का पूरा खर्च दिल्ली सरकार उठाएगी। एक रैली के दौरान अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दलित समाज का कोई भी बच्चा पैसे की कमी के कारण उच्च शिक्षा से वंचित ना रहे,

इसके लिए डॉक्टर अंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप दी जाएगी। इस स्कॉलरशिप के चलते दलित समाज के बच्चे विदेश में किसी भी यूनिवर्सिटी में लें सकेंगे। उसका सारा खर्च दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार उठाएगी। केजरीवाल ने कहा, जैसे बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी ने विदेश जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण की थी, वैसे ही अब दिल्ली के दलित समाज के बच्चे भी विदेश जाकर बिना किसी खर्च के पढ़ाई कर सकेंगे।

कानपुर में गुमशुदा मंदिरों की तलाश में रोड पर निकलीं मेयर

बोलीं- 'अब इन्हें करना पड़ेगा खाली'

कानपुर (एजेंसी)। कानपुर की मेयर और सीनियर बीजेपी नेता प्रमिला पांडे गुमशुदा मंदिरों की तलाश में पुलिस के साथ रोड पर निकल पड़ी हैं। सिर में हेलमेट लगाए प्रमिला खंडहर पड़े मंदिरों की तलाश कर रही हैं। इस दौरान उनके साथ बड़ी संख्या में पुलिस भी है। वह पुराने और बंद पड़े मंदिरों को चिन्हित कर रही हैं ताकि उनका जीर्णोद्धार कराया जा सके।

मेयर प्रमिला पांडे ने कहा कि इस जगह को सुनार गली कहते हैं। यहां पर अग्रवाल समुदाय के लोग रहते थे। कहा जाता है कि यहां हर 10 घर के बाद एक मंदिर और कुआं हुआ करता था। जो अब नहीं है। अगर हमारे मंदिर हैं तो मूर्तियां गई कहां। किसी भी धर्म-समुदाय के लोग हों अगर मंदिर वहां पर है तो उसकी सुरक्षा करना वहां के लोगों का कर्तव्य है। अब यहां पर मंदिर नहीं है। इन लोगों को खाली करना पड़ेगा। यहां पर अब फिर से पूजा पाठ होगा।

जानकारी के अनुसार, मेयर मुस्लिम बहुल इलाके में पांच पुराने मंदिरों का दौरा किया। मेयर ने कहा कि यहां रहने वाले सभी धर्मों के लोग हमारे लिए बराबर हैं। यहां पर रहने वालों से हमें कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन जर्जर हो चुके और मंदिरों की मरम्मत कराई जाएगी

और दर्शन-पूजन शुरू किया जाएगा।

संवेदनशील इलाकों में हैं मंदिर: कानपुर में यू तो बहुत सारे मंदिर हिन्दू धर्म की आस्था के प्रतीक बने हुए है। वहीं कुछ मंदिर ऐसे भी है जिन पर सालों से बीते समय की धूल की परत इतनी गहरी जमा हो गई जिसे हटाने में कानपुर प्रशासन को पूरे बल के साथ रोड पर आना पड़ रहा है। विडंबना यह है कि उनमें से ज्यादातर मंदिर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र होने के साथ ही शहर के अतिसंवेदनशील जगहों पर स्थित हैं।

मोहाली में बहुमंजिला मकान भरभराकर गिरी

कई लोगों के दबे होने की आशंका, बचाव कार्य जारी

मोहाली (एजेंसी)। पंजाब के मोहाली में एक बहुमंजिला मकान अचानक गिर गई। मकान गिरने के बाद बहुत तेज शोर हुआ। वहीं तेज आवाज सुनकर आसपास के लोग भी मौके पर पहुंच गए। घटना की जानकारी पुलिस टीम को भी दी गई। इसके बाद पुलिस की टीम के अलावा, एनडीआरएफ और फायर ब्रिगेड को भी बुला लिया गया है। मौके पर राहत और बचाव का कार्य जारी है। फिलहाल घटना के कारण का कोई पता नहीं चल सका है। अभी मलबा हटाने का काम किया जा रहा है। मलबे के अंदर कई लोगों के दबे होने की आशंका भी जताई जा रही है।

मोहाली के एसएसपी ने बताया कि एक बिल्डिंग के गिरने की खबर मिली है। अभी तक इस बात की जानकारी नहीं है कि अंदर कितने लोग फंसे हुए हैं। लगातार ऑपरेशन कार्य किया जा रहा है, सारी मशीने अंदर लगी हुई हैं। एनडीआरएफ की टीम बुला ली गई है। इसके अलावा पुलिस की टीम, जेसीबी, फायर ब्रिगेड सभी लोग राहत और बचाव कार्य में लगे हुए हैं। स्थानीय

लोगों के द्वारा भी इसमें सहयोग किया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्दी ही इसे क्लीयर कर लिया जाएगा। अगर कोई अंदर फंसा होगा तो उसे भी निकाल लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि घटना का कारण अभी पता नहीं चल सका है, इस बारे में बाद में पता चलेगा।

वहीं घटना के बारे में जानकारी देते हुए मोहाली के डीआईजी हरचरण सिंह भुल्लर ने बताया कि मोहाली के सोहाना गांव में बड़ा हादसा हो गया है। यहां एक बहुमंजिला इमारत ढह गई है। इमारत के मलबे में कई लोगों के दबे होने की आशंका है। इमारत गिरते ही बहुत तेज आवाज हुई। यह सुनकर आसपास के लोग एकत्र हो गए और मलबा हटाने लगे। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। राहत और बचाव का कार्य किया जा रहा है।

बांग्लादेश में हिंदू पुजारी की बेरहमी से हत्या, मंदिर को लूटा

ISKCON ने घटना की निंदा की

कोलकाता (एजेंसी)। बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार रुकने का नाम नहीं ले रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, बांग्लादेश के काशिमपुर सेंट्रल श्मशान में स्थित एक मंदिर में न सिर्फ पुजारी की बेरहमी से हत्या कर दी गई, बल्कि मंदिर को भी लूट लिया गया। ISKCON की कोलकाता इकाई ने शनिवार को बांग्लादेश के नाटोर में स्थित श्मशान घाट मंदिर में चरमपंथियों द्वारा हिंदू पुजारी की 'हत्या' की निंदा की है। बता दें कि बांग्लादेश से हिंदुओं के खिलाफ अत्याचार की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं, लेकिन मोहम्मद यूनुस की सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी नजर आ रही है।

'बांग्लादेश मे श्मशान भी सुरक्षित नहीं': श्मशान मंदिर की घटना पर ISKCON ने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार पर धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा करने में विफल रहने का आरोप लगाया।

शेख हसीना सरकार के पतन के बाद से देश के अल्पसंख्यक समुदाय को 'निरंतर यातना' का सामना करना पड़ रहा है। ढ्ढस्यष्टह्रह्र कोलकाता के प्रवक्ता राधारमण दास ने 'ङ्ग' पर एक वीडियो पोस्ट किया और कहा, 'बांग्लादेश में नाटोर के काशिमपुर सेंट्रल श्मशान में स्थित मंदिर पर हमले के बारे में सुनकर स्तब्ध हूं। कीमती सामान लूट लिया गया और मंदिर के सेवायत तरुण चंद्र दास की बेरहमी से हत्या कर दी गई। उनके हाथ-पैर बंधे हुए मिले। यहां तक ??कि हिंदू श्मशान भी सुरक्षित नहीं हैं।'

'मारने से पहले पुजारी को किया टॉर्चर': बता दें कि एक वायरल वीडियो में पुजारी तरुण चंद्र दास का शव दिखायी दे रहा है। वीडियो में पुजारी के हाथ-पैर बंधे नजर आ रहे हैं, हालांकि न्यूज एजेंसी 'पीटीआई-भाषा' स्वतंत्र रूप से वीडियो की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं कर सकी। राधारमण दास के मुताबिक, पुजारी को मारने से पहले शायद उसका टॉर्चर किया गया था, क्योंकि उनके हाथ-पैर बंधे हुए थे। ISKCON कोलकाता के प्रवक्ता ने कहा, 'बदमाशों ने मंदिर में लूटपाट भी की।' राधारमण दास ने कहा कि बांग्लादेश पुलिस ने इस घटना को डकैती का मामला बताया है। हालांकि ऐसा सामने आया है कि कई मामलों में पुलिस खुलकर कट्टरपंथियों का साथ दे रही है।

महाकाल मंदिर में दर्शन के नाम पर भक्तों के साथ धोखाधड़ी

उज्जैन (एजेंसी)। : विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर में भक्तों के साथ धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार, लाखों भक्तों से अवैध वसूली की गई है। प्रोटोकॉल दर्शन के नाम पर यूपी और गुजरात सहित अन्य स्थानों से आने वाले श्रद्धालुओं से 1100 से 2000 रुपए तक वसूले जा रहे थे। अवैध वसूली में मंदिर के कर्मचारी, पुरोहित और सुरक्षा गार्ड शामिल पाए गए हैं। उज्जैन पुलिस और मंदिर प्रशासन ने

इस पर सख्त कार्रवाई करते हुए गुरुवार को 6 कर्मचारियों को निलंबित कर दिया है। दो कर्मचारी राकेश श्रीवास्तव और विनोद चौकसे पर महाकाल मंदिर एक्ट की धारा में केस दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है।

एसपी प्रदीप शर्मा ने बताया कि मंदिर के सफाई प्रभारी विनोद चौकसे और सभा मंडप प्रभारी राकेश श्रीवास्तव के बैंक खातों की जांच की, जिसमें लाखों रुपए के संदिग्ध ट्रांजैक्शन पाए गए। यह राशि मंदिर में सेवा के दौरान अवैध रूप से वसूली गई थी। दोनों कर्मचारियों के खिलाफ महाकाल थाने में धारा 318 (4) 316 (2) में केस दर्ज कर लिया हैं। एसपी ने बताया कि कर्मचारियों द्वारा श्रद्धालुओं को दर्शन कराने के नाम पर निर्धारित राशि से ज्यादा राशि ली गई। जो की शासकीय खाते में जमा नहीं कर खुद रख ली गई। फोन कॉल डिटेल ऑनलाइन ट्रांजैक्शन व बैंक अकाउंट डिटेल से मामले का खुलासा हुआ है।

संक्षिप्त समाचार

44वीं एनटीपीसी सीनियर रिकर्व कम्पाउण्ड नेशनल आर्चरी चैम्पियनशिप में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों ने जीते 3 पदक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। गोपाल मैदान जमशेदपुर झारखंड में आयोजित 44वीं एनटीपीसी सीनियर रिकर्व कम्पाउण्ड नेशनल आर्चरी चैम्पियनशिप में मध्यप्रदेश राज्य आर्चरी अकादमी के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 2 रजत और 1 कांस्य पदक अर्जित किए। व्यक्तिगत कम्पाउण्ड वूमेन स्पर्धा की खिलाड़ी- कु. श्रृष्टि सिंह ने रजत पदक जीता। कु. श्रृष्टि सिंह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीता, जिसमें उन्होंने अपनी सटीक निशानेबाजी का परिचय दिया। रिकर्व वूमेन टीम स्पर्धा में टीम सदस्य- कु. सोनिया ठाकुर, वित्षा ठाकुर, कृतिका बिचपुरिया, कु. जहान्वी देशमुख ने रजत पदक प्राप्त किया। इस टीम ने बेहतरीन तालमेल और कौशल दिखाते हुए दूसरा स्थान हासिल किया। ब्रांज मिक्स टीम इवेंट में खिलाड़ी- अमित कुमार और कृतिका बिचपुरिया ने कांस्य पदक हासिल किया। अमित कुमार और कृतिका बिचपुरिया की जोड़ी ने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच कांस्य पदक हासिल किया। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने सभी विजेता खिलाड़ियों और कोचों को उनके प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा, मध्यप्रदेश के खिलाड़ी हर स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। ये उपलब्धियां प्रदेश की खेल संस्कृति को और सशक्त बनाएंगी।

पन्ना के जुगल किशोर मंदिर को मिला 'ईट राइट भोग स्थल' प्रमाण पत्र

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (स्नस्स्ड्ढ), नई दिल्ली द्वारा पन्ना के श्री जुगल किशोर मंदिर को 'ईट राइट भोग स्थल' प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है। यह प्रमाणन मंदिर परिसर के प्रसाद और खाद्य सामग्री की गुणवत्ता, स्वच्छता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रदान किया गया है। 'ईट राइट भोग स्थल' प्रमाण पत्र भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (स्नस्स्ड्ढ) की एक पहल है, जो पूजा स्थलों पर उच्च गुणवत्ता वाले और सुरक्षित खाद्य पदार्थों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है। इसका उद्देश्य खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और पोषण संबंधी जागरूकता को बढ़ावा देना है। यह प्रमाण पत्र सुनिश्चित करता है कि धार्मिक स्थलों पर परोसे जाने वाले प्रसाद व भोजन सभी मानकों का पालन करते हुए तैयार किए गए हों। श्री जुगल किशोर मंदिर, जो अपनी ऐतिहासिक और धार्मिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध है, अब इस प्रमाण पत्र के साथ स्वच्छता और गुणवत्ता के प्रतीक के रूप में उभरेगा। यह प्रमाणन न केवल स्थानीय श्रद्धालुओं बल्कि धार्मिक पर्यटकों के बीच भी मंदिर की साख को बढ़ाएगा। स्वच्छ और सुरक्षित भोजन की उपलब्धता अंतरराष्ट्रीय और घरेलू पर्यटकों के अनुभव को बेहतर बनाएगी, जिससे पन्ना जिले में धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा।

अंतर्राष्ट्रीय टाइगर तस्कर ताशी शेरपा की जमानत निरस्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स मध्यप्रदेश को मिली बढी सफलताएसटीएसएफ ने विगत 08 वर्षों से फरार अंतर्राष्ट्रीय टाइगर तस्कर ताशी शेरपा को भारत-नेपाल अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) से 24 जनवरी 2024 को गिरफ्तार किया था। उक्त आरोपी मध्यप्रदेश के सतपुडा टाइगर रिजर्व, नर्मदापुरम के अंतर्गत वन्यजीव टाइगर व पेंगोलिन के अवयवों के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अवैध व्यापार के गिरोह के सरगना है व विगत 08 वर्षों से फरार था। ताशी शेरपा टाइगर तस्कर की जमानत याचिका कई बार विभिन्न न्यायालयों (मजिस्ट्रेट, सत्र न्यायालय व उच्च न्यायालय) द्वारा खारिज की जा चुकी है। इसके उपरांत उक्त आरोपी ने सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली के समक्ष जमानत याचिका दायर की थी, जिसकी विस्तृत सुनवाई उपरांत सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा प्रकरण की गंभीरता को देखते हुये जमानत याचिका निरस्त कर दी तथा न्यायालय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नर्मदापुरम को जुलाई 2025 तक प्रकरण के निराकरण करने के निर्देश भी दिये। इस प्रकरण में एसटीएसएफ ने कुल 29 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है जिनके विरूद्ध मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट न्यायालय नर्मदापुरम के द्वारा 05-05 वर्ष के सश्रम कारावास एवं कुल 7 लाख 10 हजार रूपये का अर्थदंड का आदेश पारित किया गया है एवं प्रकरण में 3 देशों के 7 अंतर्राष्ट्रीय तस्कर फरार है।

विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने मे मध्यप्रदेश एक आधार स्तंभ बनने की क्षमता रखता है-अमिताभ कांत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने तीन दिवसीय मध्यप्रदेश सिविल सर्विसेज मीट का उद्घाटन शुक्रवार को किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित जी-20 इंडिया के शेरपा तथा नीति आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री अमिताभ कांत ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत 30 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने की अपनी यात्रा पर आगे बढ़ रहा है, ऐसे में मध्यप्रदेश की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। मध्यप्रदेश अपनी विशाल प्राकृतिक संपदा, रणनीतिक स्थिति और विकास की अपार संभावनाओं के साथ, विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक आधार स्तंभ बनने की क्षमता रखता है। श्री अमिताभ कांत ने कहा कि मध्यप्रदेश को अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध वन्य जीवन और सांस्कृतिक विरासत का वरदान प्राप्त है। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों, इसके विशाल राष्ट्रीय उद्यानों एवं टाइगर रिज़र्व के नेटवर्क के कारण, यह राज्य भारत का अग्रणी पर्यटन गंतव्य बना है। मध्यप्रदेश अपनी पर्यटन क्षमता से राजस्थान और केरल जैसे राज्यों को

वैश्विक पर्यटन बाजार में कड़ी टक्कर दे रहा है। श्री अमिताभ कांत ने कहा कि भारत की दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की विकास यात्रा तब ही पूरी होगी जब इसके राज्य भी सतत प्रगति करें।

विकसित मध्यप्रदेश की यात्रा विकसित भारत के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह मेल खाती है। मध्यप्रदेश प्रगति, नवाचार और समावेशिता का आदर्श बनकर, भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरने में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार है। उद्घाटन सत्र के बाद 'नई-पुरानी बातें' विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। पैनल चर्चा में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने प्रशासनिक सेवा में टीम वर्क को सबसे महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि अधिकारी को सुनने, पढ़ने, अनुभव लेने और आत्म-निरीक्षण कर खुद को बेहतर इंसान और प्रभावी प्रशासक बनाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने शिव खेड़ा के कथन का उल्लेख करते हुए कहा सुनने के लिए सीखो और सीखने के लिए सुनो। चर्चा में पूर्व मुख्य सचिव श्री आर. परशुराम, पूर्व मुख्य सचिव श्री बीपी सिंह, सेवानिवृत वरिष्ठ आईएएस अधिकारी श्री पी.के दास ने अपने अनुभव साझा किए। वक्ताओं ने युवा अधिकारियों को नैतिक मूल्यों को अपने कार्य में आत्मसात करने और प्रशासनिक निर्णयों में अखंडता बनाए रखने की सलाह दी। पैनल चर्चा में वक्ताओं ने अधिकारियों से अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक सेवाएं पहुंचाने और साहस के साथ सही मुद्दों के लिए खड़े होने की बात कही।

भारत को विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में लाने के लिए म.प्र. प्रतिबद्ध-उपमुख्यमंत्री देवड़ा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत को समग्र रूप से विकसित करने तथा विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं की श्रेणी में लाने के लिए समर्पित और प्रतिबद्ध है।

उज्जैन में 2028 में आयोजित होने वाले सिंहस्थ महापर्व की चर्चा करते हुए उपमुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल नेतृत्व में प्रदेश सरकार द्वारा सिंहस्थ क्षेत्र में सुनियोजित रूप से विकास व जन-सुविधाओं की भी व्यापक व्यवस्था के लिए आगामी बजट में %सिंहस्थ% आयोजन के लिए प्रावधान का अनुरोध किया। केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन की अध्यक्षता में शुक्रवार को राजस्थान के जैसलमेर में राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों के साथ हुई प्री बजट मीटिंग में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उपमुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि विशेष पूंजीगत सहायता योजना के संबंध में आम जनता के जीवन-यापन में सकारात्मक परिवर्तन भी हो रहा है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में प्रदेश का कुल पूंजीगत व्यय रूपये 46 हजार 798 करोड़ था जो लगभग 23 प्रतिशत वृद्धि के साथ वर्ष 2023-24 में रूपये 57 हजार 348 करोड़ रहा है। उन्होने कहा कि वर्ष 2024-25 में लगभग रूपये 64 हजार 738 करोड़ का पूंजीगत व्यय अनुमानित है। वर्ष 2024-25 के लिए रूपये 6 हजार 187 करोड़ 73 लाख की राशि प्रदान करने के लिए केन्द्र सरकार को धन्यवाद दिया।

उपमुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने राज्य की ओर से बजट की तैयारी से संबंधित सुझाव देते हुए कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन के अंतर्गत वित्त पोषित राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन, राष्ट्रीय विधवा पेंशन एंव राष्ट्रीय निश्शक्त पेंशन योजनाओं में वित्त पोषण की वर्तमान व्यवस्था पर पुर्नविचार की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 से 2024 के मध्य प्रतिवर्ष 0.29 प्रतिशत से लेकर 0.44 प्रतिशत तक की जीवन-प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। इस तथ्य के परिणामस्वरूप योजनान्तर्गत हितग्राहियों की वर्तमान पंजीबद्ध संख्या 24 लाख 14 हजार से बढ़कर 29 लाख 43 हजार होना अनुमानित है।

चित्रकला से बच्चों ने जाना ऊर्जा संरक्षण का महत्व

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह (14 दिसम्बर 2024 से 21 दिसम्बर 2024) के दौरान होने वाले विभिन्न आयोजनों में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा पी.एम. सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन चिनार पार्क में किया गया।

प्रतियोगिता में शहर के 15 प्रतिष्ठित विद्यालयों के 210 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता 02 वर्गों में आयोजित की गयी थी, जिसमें जूनियर वर्ग (कक्षा 5 से 6) में प्रथम पुरस्कार जॉन मेरी (कार्मल कान्वेंट स्कूल बी.एच.ई.एल), द्वितीय पुरस्कार रिद्धिमा महाराणा (कार्मल कान्वेंट स्कूल बी.एच.ई.एल), तृतीय पुरस्कार नायसा यादव (कार्मल कान्वेंट स्कूल बी.एच.ई.एल.) एवं सात्वंना पुरस्कार मो.मारूफ खान (ब्रिलियंट कान्वेंट स्कूल) ने प्राप्त किया।

इसी प्रकार सीनियर वर्ग (कक्षा 7 से 8) में प्रथम पुरस्कार हिमांशी पाटिल (आनंद विहार स्कूल), द्वितीय पुरस्कार निदा अली (मॉडल हा.से. स्कूल), तृतीय पुरस्कार अरहम ईमरान (मॉडल हा.से.स्कूल) एवं सात्वंना पुरस्कार ऋषि कुमार कुशवाहा (मॉडल हा.से. स्कूल) ने प्राप्त किया।

इसी के साथ मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता हेतु स्कूल के मध्य एक रनिंग ट्राफी की घोषणा की गई जो सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यालय को दी जाती है। इस वर्ष यह ट्राफी कार्मल कान्वेंट स्कूल, बी.एच.ई.एल. को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर दी गयी है। प्रतियोगिता के दौरान डॉ. कीर्ति सिंह (गीताजंली कॉलेज), डॉ. रेखा दीमन (हमीदिया कॉलेज) एवं मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी से सेवानिवृत्त महाप्रबंधक श्री एन.के.भोगल ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

तकनीकी का लाभ लेकर स्वावलंबी बनें किसान-मंत्री लखन पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्री लखन पटेल ने कहा है कि किसान नवीन तकनीकों का लाभ लेकर स्वाबलंबी बनें। नवीन तकनीकी एवं योजनाओं का उद्देश्य किसानों को रोजगार दिलाने एवं आत्मनिर्भर बनाने पर केंद्रित होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिन किसानों ने अपनी कृषि और आजीविका में सुधार किए हैं, उनकी कहानी प्रकाश में आना चाहिए।

मंत्री श्री पटेल शुक्रवार को केंद्रीय कृषि अभियान अभियांत्रिकी संस्थान भोपाल में आयोजित विशाल कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं अभियांत्रिकी मेले को संबोधित कर रहे थे। जिले की भोज आत्मा समिति एवं राइजिंग मध्य प्रदेश के सहयोग से आयोजित इस मेले में देश भर की लगभग 100 से अधिक कंपनियों ने कृषि यंत्रों एवं तकनीक का सजीव प्रदर्शन किया। यह तीन दिवसीय आयोजन दिनांक 21 व 22 दिसंबर को भी जारी रहेगा। इस अवसर पर आयोजित कृषि संगोष्ठी में प्रमुख रूप से डॉ. एस एस सिंधु, वैज्ञानिक आईएआरआई नई दिल्ली, डॉ. वाई सी गुप्ता, डॉ. पी बी भदोरिया आईआईटी खड़गपुर,प्रोफेसर डॉ. सी के गुप्ता सोलन, हिमाचल प्रदेश, डॉ. सी आर मेहता निदेशक कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, डॉ. सुरेश कौशिक आई. ए. आर. आई. नई दिल्ली, डॉ. प्रकाश नेपाल आदि वैज्ञानिको ने भाग लेकर विभिन्न विषयों पर किसानों को उपयोगी जानकारी दी। किसानो की समस्याओं और जिज्ञासाओं का स्थल निराकरण भी किया था। आयोजन के विस्तृत रूप रेखा श्री भरत बालियान ने प्रस्तुत की।

सम्राट विक्रमादित्य राष्ट्रीय और शिखर सम्मान देगी मध्यप्रदेश सरकार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सम्राट विक्रमादित्य के नाम से मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सम्राट विक्रमादित्य राष्ट्रीय सम्मान और शिखर सम्मान दिया जायेगा। सम्राट विक्रमादित्य राष्ट्रीय सम्मान की सम्मान राशि 11 लाख रूपये होगी। वहीं सम्राट विक्रमादित्य शिखर सम्मान में 2 लाख रूपये की राशि प्रदान की जाएगी। शिखर सम्मान प्रादेशिक होगा। शिखर सम्मान प्रतिवर्ष तीन प्रतिष्ठित संस्था एवं व्यक्तियों को प्रदान किये जायेंगे। पहली श्रेणी न्याय, दानशीलता, वीरता, सुशासन, राजनय, शौर्य होगी। दूसरी श्रेणी में खगोल विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान तथा प्राच्य वांग्मय विषय को सम्मिलित किया गया है और तीसरी श्रेणी में रचनात्मक एवं जनकल्याणकारी कार्य करने वाली संस्था या व्यक्ति को सम्?मान से अलंकृत किया जायेगा। साथ ही प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान पट्टिका भी प्रदान की जायेगी। महाराजा विक्रादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने बताया कि सम्राट विक्रमादित्य राष्ट्रीय सम्मान सम्राट विक्रमादित्य के बहुविध गुणों न्याय, दानशीलता, वीरता, सुशासन, खगोल एवं ज्योतिष विज्ञान, कला, शौर्य, प्राच्य वांग्मय, राजनय, आध्यात्मिक क्षेत्र, रचनात्मक एवं जनकल्याणकारी कार्य के क्षेत्र में श्रेष्ठतम उपलब्धियों एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जायेगा। यह अलंकरण मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा स्थापित किया गया है। विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं, समाजशास्त्रियों, बुद्धिजीवियों, लेखकों, समीक्षकों, पत्रकारों से सम्मान के लिए अनुशंसा/नामांकन की प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जायेगी। सम्मान का चयन प्रतिवर्ष उच्च स्तरीय निर्णायक समिति के माध्यम से किया जायेगा।

राष्ट्रीय बाल रंग में मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति की छटा बिखरी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा तीन दिवसीय बाल रंग समारोह की शुक्रवार को रंगारंग शुरूआत हुई। बाल रंग पहले दिन राज्य स्तरीय साहित्यिक, संस्कृत योग, मदरसा निशक्तजन, लोक नृत्य एवं वादन की प्रतियोगिताएं संपन्न हुई। पहले दिन प्रदेश के 9 संभागों से आए संभाग स्तरीय दलों ने अपने-अपने संभाग के कनिष्ठ और वरिष्ठ वर्ग में लोक नृत्य की आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी। समारोह में लोक नृत्य बरेदी, बैगा, गौर, ठीमरयाई, गणगौर और गायकी नृत्य की शानदार प्रस्तुतियां हुई। रंग बिरंगी देसी परिधानों में सजे स्कूली बच्चों ने पूरे प्रदेश की संस्कृति को एक मंच पर शानदार तरीके प्रस्तुत किया। बच्चों ने एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को साकार किया। मदरसा प्रतियोगिताओं में भोपाल

संभाग की बालिकाओं ने कव्वाली में प्रथम स्थान प्राप्त किया, इसके साथ-साथ निशक्तजन जन प्रतियोगिता में दिव्यांग बच्चों ने कविता पाठ नृत्य और आकर्षक चित्रकला की पेंटिंग बनाई। प्रतियोगिता में जबलपुर संभाग के बच्चों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संस्कृत प्रतियोगिता में वेद पाठ संस्कृत नाटिका की प्रस्तुतियां हुई। स्कूली बच्चों ने मधुर स्वर में एक साथ वेद पाठ प्रस्तुत किया। कालिदास के ग्रंथ अभिज्ञान शाकुंतल पर उज्जैन संभाग द्वारा आकर्षक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई। साहित्यिक प्रतियोगिता में वाद-विवाद, देश भक्ति आधारित काव्य पाठ निबंध लेखन की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। सांस्कृतिक प्रतियोगिता में गायन और वादन की प्रतियोगिताएं हुई। जबलपुर की छात्रा अंशिका सोनी ने सितार पर आकर्षक प्रस्तुति दी। भोपाल संभाग के छात्र रूपम ने पखावज पर तीन ताल की प्रस्तुति दी। मुख्य मंच पर सभी 9 संभाग के कनिष्ठ और वरिष्ठ वर्ग की लोक नृत्य की प्रस्तुतियां हुई। मध्यप्रदेश के सभी अंचल मालवा, बुंदेलखंड, बघेलखड, निमाड़, मध्य भारत एवं महाकौशल की लोक नृत्य की प्रस्तुतियां हुई।इस वर्ष बाल रंग में एक नवाचार किया गया है इसमें स्कूली विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प के उत्पादों की एक प्रदर्शनी तेजस्वी मध्यप्रदेश के बैनर तले लगाई गई है जिसमें भोपाल के शासकीय मे स्कूली छात्राओं द्वारा तैयार हस्तशिल्प उत्पाद प्रदर्शित किए गए।

अंतराष्ट्रीय वन मेले में 300 से अधिक आगंतुको ने निशुल्क चिकित्सीय परामर्श प्राप्त किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय वन मेले के चौथे दिन भी लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और बढ़ते दिनों के साथ साथ लोगों का उत्साह भी बढ़ता जा रहा है। भोपाल और उसके आस पास के हिस्सों से बड़ी तादाद में लगभग 35000 लोगों ने मेले का आंनद लिया। आज मेले में लगभग 30.50 लाख रूपए के वनोपज हर्बल उत्पाद से निर्मित औषधियों की बिक्री हो चुकी है। मेले में स्थापित ओ.पी.डी. में बड़ी संख्या में लगभग 300 से अधिक आगंतुको ने निशुल्क चिकित्सीय परामर्श प्राप्त किया। ओ. पी. डी. में लगभग 90 आयुर्वेदिक चिकित्सकों तथा अनुभवी वैद्यों द्वारा नि:शुल्क परामर्श लिया गया।

मेले में लगे बांस उत्पादों के स्टॉल्स, जिसमे बांस से बने फर्नीचर, घर सजावट के सामान एवं अन्य प्रकार की वस्तुओं को लोग बहुत पसंद कर रहे हैं। लोगों के इस रुझान से बांस के उत्पाद में सम्मिलित वन समितियों को अच्छा खासा प्रोत्साहन मिल रहा है। दो दिवसीय कार्यशाला (कांफ्रेंस), का तृतीय सत्र से निरन्तर विभिन्न सत्रों में नेपाल, श्रीलंका, यू.एस.ए. के शासकीय संस्थानों के वरिष्ठ वैज्ञानिकों/ अधिकारयों के साथ-साथ केरल, झारखंड, राजस्थान एवं आसाम से पधारे विषय विशेषज्ञों द्वारा लघु वनोपज से महिला सशक्तिकरण आधारित अनुभवों का साझा किया गया। शाम 5:00 बजे समस्त सत्रों का समापन कर भारतीय वन प्रबंधन संस्थान के प्रोफेसर श्री अद्वैत के द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का सारांश प्रस्तुत किया गया। बैतूल के वनमंडलाधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।

मेला प्रांगण में आज सुबह 11 बजे से रात्रि 10 बजे तक रंगारंग कार्यक्रम चलते रहे। मेले में आयोजित एकल और सामूहिक गायन में कक्षा 01 से 12 तक के लगभग 11 विद्यालयों से 90 से भी अधिक छात्र छात्राओं ने अपनी अद्भुत कला का प्रदर्शन किया।

नायब तहसीलदार 25 हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

जमीन के नामांतरण के लिए मांगे थे 50 हजार रुपए, रीवा लोकायुक्त ने की कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी में नायब तहसीलदार वाल्मीकि साकेत को 25 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए पकड़ा है। कार्रवाई शनिवार सुबह रीवा लोकायुक्त पुलिस ने की है। अफसर ने जमीन के नामांतरण के लिए 50 हजार रुपए मांगे थे।

सीधी के रहने वाले वाले किसान आशु शुक्ला ने कुछ दिन पहले लोकायुक्त में शिकायत की थी। शिकायत में बताया गया, मुझे जमीन का नामांतरण कराना था। इसके लिए नायब तहसीलदार ने एक लाख रुपए मांगे। बातचीत करने पर 50 हजार रुपए में सौदा तय हुआ। शिकायत के सत्यापन के बाद रिश्वत के रुपए देना तय हुआ। लोकायुक्त की टीम ने प्लानिंग के तहत रुपयों में रंग लगाकर आशु शुक्ला को दिए।

पहली किस्त लेते अफसर गिरफ्तार: शनिवार सुबह करीब 10 बजे आशु शुक्ला पहली किस्त 25 हजार रुपए लेकर नायब तहसीलदार वाल्मीकि साकेत के आवास पर पहुंचा। आशु ने जैसे ही रुपए रुपए दिए, लोकायुक्त ने रंगे हाथ पकड़ लिया। रिश्वत के 25 हजार रुपए भी बरामद कर लिए। अफसर के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। लोकायुक्त डीएसपी प्रवीद्र सिंह ने बताया कि 12 सदस्य की टीम ने नायब तहसीलदार की घेराबंद कर पकड़ा है। मामले की जांच की जाएगी।

सिंगरौली पहुंचे रीवा रेंज के आईजी

पुलिस लाइन का किया निरीक्षण, पुलिसकर्मी हुए सम्मान

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। रीवा रेंज के आईजी डॉक्टर महेंद्र सिकरवार दो दिवसीय दौरे पर सिंगरौली पहुंचे। शनिवार को उन्होंने पुलिस लाइन पर आयोजित विशेष परेड की सलामी ली और पुलिस लाइन पचोर का वार्षिक निरीक्षण किया। इस दौरान उत्कृष्ट काम करने वाले पुलिसकर्मियों को सम्मानित किया। पुलिस महानिरीक्षक डॉ. महेंद्र सिकरवार जिले के पचोर में स्थित पुलिस लाइन में आयोजित की गई विशेष परेड की सलामी ली और परेड में शामिल पुलिसकर्मियों को परेड की बारीकी से अवगत कराया। जिन पुलिसकर्मियों की हेल्प ज्यादा दिखाई। उन्हें इशारों-इशारों में यह भी समझाया की पुलिस का फिट होना जरूरी है। परेड के निरीक्षण के बाद सैनिक सम्मेलन में पहुंचे।

इसमें पुलिस अधिकारी और कर्मचारियों की समस्याओं को उन्होंने सुना शिकायत और सुझावों पर चर्चा की। उन्होंने निर्देशित किया कि पुलिस बल की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण सत्र बुलाया जाए ताकि पुलिसकर्मियों का मनोबल भी बढ़ सके। इस दौरान कई पुलिस कर्मियों ने अपनी-अपनी समस्याएं भी बताई।

इसके बाद वह पुलिस लाइन का वार्षिक निरीक्षण पहुंचे, जिसमें प्रधान लेखन कक्षा, शस्त्रागार, स्टोर शाखा और वाहन शाखा का निरीक्षण किया। निरीक्षण में उप पुलिस महानिरीक्षक साकेत प्रकाश पांडे, पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवकुमार वर्मा, नगर पुलिस अधीक्षक पन्नू परस्ते सहित एसडीओपी और थाना, चौकी प्रभारी मौजूद रहे।

शासकीय महाविद्यालय मड़वास में ध्यान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार शासकीय महाविद्यालय मड़वास में विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सुरेंद्र गुप्ता ने कहा कि मानव जीवन में ध्यान बहुत उपयोगी है और हम सबको ध्यान करना चाहिए। कार्यक्रम में सह वक्ता के रूप में डॉ.पूजा गर्ग ने कहा कि नियमित ध्यान से मानसिक तनाव कम होता है। द्वितीय मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. दीपक अग्निहोत्री ने अंतराष्ट्रीय ध्यान दिवस के इतिहास और महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. लक्ष्मीकांत कुशवाहा ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार के डॉ. कमलेश जायसवाल, डॉ. ज्योति रजक, डॉ राजेश पटेल प्रो.प्रवीण कुमार डॉ अनुराग तिवारी डॉ आकांक्षा मिश्रा डॉ सौरभी गुप्ता डॉ पंकज मिश्रा डॉ निशा सिंह डॉ अमिता खरे डॉ संगीता मिश्रा सुंदर लाल प्रजापति अनिल केवट सहित महाविद्यालय के छात्र/छात्रा उपस्थित थे।

लैब टेक्नीशियन की इलाज के दौरान मौत

डॉक्टर पर लापरवाही का आरोप, परिजन बोले- बुलाने के बाद 10 घंटे तक नहीं पहुंचा डॉक्टर

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर में नर्मदा अस्पताल से टीकमगढ़ अस्पताल में पदस्थ लैब टेक्नीशियन की मौत का मामला सामने आया है। लैब टेक्नीशियन गुरुवार को पथरी के ऑपरेशन के लिए अस्पताल में भर्ती हुआ था, शुक्रवार की दोपहर में उसका ऑपरेशन हुआ उसके बाद उसकी तबीयत बिगड़ गई।

कई बार परिजन ने डॉक्टर को कॉल किया लेकिन डॉक्टर 10 घंटे बाद शनिवार की रात अस्पताल पहुंचा इसके कुछ समय बाद ही व्यक्ति की मौत हो गई। शनिवार की सुबह जिला अस्पताल चौकी पुलिस ने मृतक का पंचनामा बनाया और बॉडी को पोस्टमार्टम के लिए मॉर्चुरी भेज दिया, जहां उसका पोस्टमॉर्टम किया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार बाली पिता लखन अहिरवार उम्र 38 साल निवासी टीकमगढ़ जिला के ओमनगर कॉलोनी में रहने वाला है। वह गुरुवार की दोपहर 2 बजे ट्रेन से छतरपुर के नर्मदा अस्पताल में पथरी का इलाज करने के लिए आया था। अस्पताल स्टाफ ने ऑपरेशन के नाम पर 50 हजार रुपए मांगे थे। परिजन ने ऑपरेशन के बाद पैसे देने की बात कह कर 12 हजार 500 रुपए जमा कर दिए थे।

आईसीयू में भर्ती किया गया: शनिवार की दोपहर 2 बजे उसका ऑपरेशन हुआ था। ऑपरेशन के बाद से ही व्यक्ति की हालत बिगड़ी उसे आईसीयू में भर्ती किया गया। उसके बाद कई बार डॉक्टर को कॉल करके बुलाने का प्रयास किया लेकिन डॉक्टर ने कहा नॉर्मल है सब ठीक हो जाएगा।

परिजनों ने कहा कि अगर हालत खराब है तो उनके मरीज को रेफर कर दीजिए। लेकिन अस्पताल प्रबंधन ने एक नहीं सुनी रात में 12:00 बजे डॉक्टर अस्पताल में पहुंचे तब तक उसकी हालत ज्यादा बिगड़ चुकी थी। डॉक्टर ने परिजन से कहा सब ठीक है, लेकिन 2 घंटे बाद 2:00 बजे डॉक्टर ने परिजन को उसकी मौत की खबर दी।

डॉक्टर ने इलाज के पर्चे देने से मना किया: परिजन ने नाराज होकर अस्पताल में हंगामा कर दिया और डॉक्टर से इलाज के पर्चे मांगे लेकिन डॉक्टर ने देने से मना कर दिया और मौके से चले गए। इसके बाद परिजन सुबह जिला अस्पताल बॉडी लेकर पहुंचे और उन्होंने जिला अस्पताल में पोस्टमार्टम कराया और बॉडी लेकर घर चले गए।

छोटे भाई रामकिशन ने बताया कि डॉक्टर की इलाज में लापरवाही से भाई की मौत हुई है। भाई टीकमगढ़ अस्पताल में लैब टेक्नीशियन के पद पर पदस्थ था उसके पेट में पथरी थी इलाज करने के लिए नर्मदा अस्पताल में आया था।

डॉक्टर ने कहा सब ठीक है: 35 हजार में इलाज की बात हुई थी हम लोगों ने साढ़े 12 हजार रुपए जमा भी कर दिए थे, कल दोपहर में ऑपरेशन हुआ भाई की तबीयत बिगड़ी कई बार डॉक्टर से आने की बात कही। स्टाफ ने भी फोन लगाया लेकिन डॉक्टर रात में 12:00 बजे पहुंचे। डॉक्टर ने कहा सब ठीक है कुछ समय बाद डॉक्टर ने भाई की मौत की खबर सुना दी।

मृतक के साले विमलेश अहिरवार ने बताया कि डॉक्टर ने जितने पैसे मांगे उतने पैसे देने की हम लोगों ने बात की हमारे जीजा भी सरकारी अस्पताल में डॉक्टर थे लेकिन डॉक्टर ने उनके इलाज में लापरवाही की उनका बीपी घट रहा था उन्होंने कहा कि डॉक्टर को बुला दो हम लोगों ने अस्पताल में मौजूद स्टाफ से कई बार डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा लेकिन 10 घंटे बाद डॉक्टर आया कुछ समय बाद उनकी मौत हो गई

इस संबंध में जब सीएमएचओ आर पी गुप्ता से बात करने का प्रयास किया गया तो उन्होंने कहा कि मैं मीटिंग में हूं बाद में बात करता हूं।

सभी लें सरकार की योजनाओं का लाभ, जिला पंचायत सीईओ ने ग्रामीणों से कहा

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के नवागत जिला पंचायत सीईओ अंशुमन राज ने शनिवार दोपहर करीब 2 बजे केशलार व घोरबंधा गांव का निरीक्षण किया, साथ ही साथ चौपाल गांव के माध्यम से लोगों के साथ जमीन पर बैठकर चर्चा की।

दरअसल, सीधी जिले में पीएम जनमन कार्यक्रम किया जा रहा है। गांव की ओर चलो अभियान के तहत कार्यक्रम में खुद जिला पंचायत सीईओ मौजूद थे। जिला पंचायत सीईओ अंशुमान राज ने बताया कि सरकार के द्वारा चलाई गई योजनाओं का लाभ सभी को लेना चाहिए। ऐसे जो पात्र हितग्राही हैं, वे अपने क्षेत्र के सरपंच सचिव, रोजगार सहायक या जिला पंचायत सीईओ सहित अन्य अधिकारियों से मिलकर आयुष्मान योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, संबल कार्ड योजना साहित्य अन्य योजनाओं का लाभ लेना चाहिए, अगर कोई भी अधिकारी कर्मचारी इन योजनाओं के बदले पैसे मांगता है तो वह हमसे या अन्य अधिकारियों से शिकायत कर सकते हैं। जिला पंचायत सीईओ ने पीने के पानी की समस्या और अन्य चीजों को लेकर भी निर्देश दिए। उनके साथ जनपद पंचायत सीईओ ज्ञानेंद्र मिश्रा, उपयंत्री अमर सिंह, पीसीओ पवन सिंह के साथ सरपंच सचिव और अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

आजादी के 78 वर्ष बाद ग्राम नेवरिया की जनता को सड़क की सौगात

मीडिया ऑडीटर, मनगवा निप्र। विधानसभा क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम पंचायत हिनौती अंतर्गत ग्राम नेवरिया की जनता सड़क को ले कर परेशान थी इस मामले में कई बार ग्रामीण सहित राजनीतिक लोगों द्वारा सड़क बनवाने का प्रयाय कई सालों से किया जा रहा था, लेकिन जमीनी अर्चन में मामला रुक जाया करता था। हिनौती अंतर्गत गौ धाम से जुड़ जाएगी सड़क। आपको बता दें, यहां की सड़क निर्माण कार्य का टेक्निकल सर्टिफिकेट ग्रामीण यांत्रिकी सेवा क्रमांक 1 में कई महीनो से पड़ा था। आपको बता इस क्षेत्र में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला जी का दौरा बना रहता है, गौ धाम दौरे के दौरान जनता द्वारा सड़क की बात उनके संज्ञान में लाई गई थी जिस पर उनके द्वारा सड़क निर्माण का आश्वासन दिया गया था।

मंत्री प्रतिनिधि राजेश पांडेय द्वारा लगातार ग्राम नेवरिया की जनता से संवाद करके सड़क निर्माण में हो रही अड़चनों को दूर कर सड़क निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे आज दिनांक से सड़क का निर्माण कार्य चालू हो गया वह खुद लोगों का मुंह मीठा करके सड़क निर्माण कार्य चालू करवाया। आपको बता दे इस सड़क का निर्माण हो जाने से डाढ़, नेवरिया, से होते हुए गोधाम तक का जुड़ाव हो जायेगा। गांव की स्थानीय जनता, विनोद तिवारी, इंद्रमणि तिवारी,इंद्रलाल तिवारी, जितेंद्र तिवारी,गयाप्रसाद मिश्रा, वंदना मिश्रा, सीएम सिंह सहित कई अन्य ग्राम जानो द्वारा राजेश पांडे जी का आभार जताया है। वहीं इस मामले क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता देवेंद्र तिवारी द्वारा उप मुख्यमंत्री सहित राजेश पांडेय जी एवं ग्राम के सक्रिय जनता का आभार जताया है।

अनूपपुर मंडी में खुले में पड़ी 37 करोड़ की धान

किसानों को 20 दिन बाद भी भुगतान नहीं, परिवहन की रफ्तार भी धीमी

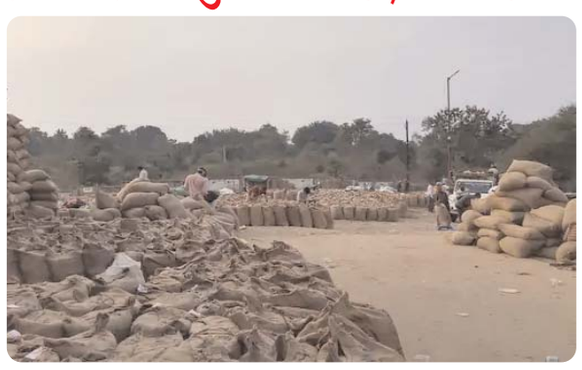

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर में 2 दिसंबर से धान उपार्जन किया जा रहा है। इस साल प्रयोग के तौर पर नागरिक आपूर्ति निगम की जगह राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ को उपार्जन का कार्य दिया गया है।

जिले में अब तक 5 हजार 949 किसानों से 2 लाख 88 हजार 331 क्विंटल धान खरीदी जा चुकी है। खास है कि 20 दिन बाद भी अन्नदाताओं को भुगतान का इंतजार है। वहीं, दूसरी तरफ शुक्रवार सुबह से आसमान में बादलों ने डेरा जमा लिया है। मौसम विभाग के अनुसार आगामी एक-दो दिन में बूंदाबांदी की आशंका भी है। बावजूद खुले में 37 करोड़ 77 लाख रुपए की धान रखी है।

गोदाम आधारित केन्द्रों में भी भुगतान नहीं: जिले में इस साल 21 हजार 974 किसानों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। अब तक 5,949 से किसानों 2 लाख 88 हजार 331 क्विंटल धान खरीदी जा चुकी है। इसके बदले में किसानों को 63 करोड़ 72 लाख 28 हजार 326 रुपए का भुगतान किया जाना है।

एक पखवाड़े का समय बीत गया है, लेकिन भुगतान की प्रक्रिया प्रारंभ नहीं हो पाई है। यही नहीं, एक दर्जन गोदाम आधारित उपार्जन केन्द्रों में 1 लाख 36 हजार क्विंटल धान का परिवहन दर्शाया जा रहा है। इसके बदले भी किसानों को भुगतान भी नहीं मिला है।

यह भी आ रहा सामने: जिले में 22 मिलर्स मिलिंग का काम करते हैं। राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ के नियमों के अनुसार मिलिंग के पश्चात 65 फीसदी चावल एफसीआई के गोदाम और 35 फीसदी चावल को नागरिक आपूर्ति निगम के गोदाम में जमा किया जाना है। जिले में एफसीआई की एक भी गोदाम नहीं है। ऐसे में 45 दिन के अंदर चावल नहीं जमा करने वाले मिलर्स पर जुर्माना भी लगाया जाएगा। इसे देखते हुए भी मिलर्स के द्वारासुस्त रफ्तार से धान का परिवहन किया जा रहा है।

विश्व ध्यान दिवस पर सामूहिक भावातीत ध्यान का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। महर्षि विद्या मंदिर में "विश्व ध्यान दिवस"के अवसर पर "सामूहिक भावातीत ध्यान" का आयोजन जनपद पंचायत रायपुर करचुलियान के अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी एवं राज्य आनन्द संस्थान भोपाल के आनंदम सहयोगी तथा आनन्द विभाग के ब्लॉक संपर्क प्रमुख व्यक्ति एवं "महर्षि ट्रांसीडेंटल मेडिटेशन क्लब" के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. गोविन्द नारायण श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया।इस अवसर पर महर्षि विद्या मंदिर के प्राचार्य बसंत कुमार रावत,भावातीत ध्यान सिद्धीशिक्षक चंद्रमणि पांडेय सहित विद्यालय के समस्त शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं ने सामूहिक ध्यान किया।

क्रिकेटर राहुल तेवतिया परिवार सहित बागेश्वर धाम पहुंचे

पंडित धीरेंद्र शास्त्री से की मुलाकात, कहा- टीवी पर देखकर आने का सोचता था

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। आईपीएल में गुजरात टाइटंस टीम के ऑलराउंडर क्रिकेटर राहुल तेवतिया शनिवार सुबह बागेश्वर धाम दर्शन करने पहुंचे। इस दौरान उनके साथ पत्नी रिद्धि और बेटा अम्बर भी दिखे। दर्शन के बाद उन्होंने बागेश्वर महाराज से मुलाकात की। उन्होंने बागेश्वर महाराज से अपने जीवन और खेल से जुड़े अनुभव भी साझा किए।

टीवी पर देखकर दर्शन करने का सोचते थे: इस दौरान उन्होंने बताया कि वह बागेश्वर धाम पहली बार आए हैं। इससे पहले वे बागेश्वर महाराज को टीवी पर देखकर आने का सोचते थे कि उन्हें असलीयत में दर्शन करने का मौका कब मिलेगा।

सकारात्मक महसूस किया: इस दौरान उन्होंने बताया कि वह हजारों की संख्या में देश-विदेश से आए श्रद्धालुओं को देखकर काफी अच्छा लगा। यहां आकर उन्होंने सकारात्मक महसूस किया।

सवालों के जवाब मिले: राहुल ने बताया कि उनके मन में जीवन को लेकर जो सवाल थे। उन सभी के जवाब बागेश्वर महाराज ने बिना पूछे दे दिए। साथ ही बताया कि उन्हें बागेश्वर महाराज ने फरवरी में होने वाले 251 कन्या विवाह का भी निमंत्रण दिया। उन्होंने जल्द फिर बागेश्वर धाम आने की मंशा जताई है।

कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा, जिला- रीवा (म.प्र.)

//निविदा सूचना //

क्रमांक 341/NULM/न.पा.नि./2024 रीवा, दिनांक 19.12.2024

निम्नलिखित कार्य हेतु ईच्छुक गैर शासकीय/धर्मिक/स्वयं सेवी संस्था/कल्याणकारी संस्था/एरिया लेवल फेडरेशन/ स्वसहायता समूह/व्यक्तियों से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट https://mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्र.	टेण्डर क्रमांक एवं जारी दिनांक तथा NIT क्रमांक/ दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की समयावधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं बिड सिक्योरिटी मनी	निविदा की अंतिम तिथि
1	2	3	4	5	6
1.	2024_UAD_389881_1 20.12.2024 338/ 19.12.2024	महामृत्युंजय कॉम्पलेक्स, एस.ए.एफ. चौक, रीवा में स्थित दीनदयाल रसोई योजना (तृतीय चरण) के संचालन व संधारण का कार्य।	12 माह	2000.00 20000.00	06.01.2025 18:00 बजे तक।
2.	2024_UAD_389882_1 20.12.2024 339/ 19.12.2024	पुराना ओ.पी.डी. भवन, हॉस्पिटल चौक, रीवा में स्थित दीनदयाल रसोई योजना (तृतीय चरण) के संचालन व संधारण का कार्य।	12 माह	2000.00 20000.00	06.01.2025 18:00 बजे तक।
3.	2024_UAD_389883_1 20.12.2024 340/ 19.12.2024	पुराना बस स्टैंड परिसर, रीवा में स्थित दीनदयाल रसोई योजना (तृतीय चरण) के संचालन व संधारण का कार्य।	12 माह	2000.00 20000.00	06.01.2025 18:00 बजे तक।

नोट:- निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन https://mptenders.gov.in की वेबसाइट पर ही किया जायेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

सहायक आयुक्त
नगर पालिक निगम रीवा (म.प्र.)

विचार

संसद की कार्य उत्पादकता का लगातार कम होना संसदीय प्रणाली को विफल कराने की साजिश है

संसद का शीतकालीन सत्र सत्ता पक्ष और विपक्ष द्वारा एक दूसरे को अपनी अपनी ताकत दिखाने के बाद अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। अडाणी मुद्दे को लेकर हंगामे के साथ शुरू हुआ संसद का सत्र अम्बेडकर मुद्दे पर हंगामे के साथ खत्म हुआ। सत्र के दौरान संविधान पर चर्चा जरूर हुई लेकिन संसदीय व्यवधान का नया रिकॉर्ड भी बना दिया गया। 20 दिनों के इस सत्र के रिपोर्ट कार्ड की बात करें तो आपको बता दें कि लोकसभा में कामकाज की उत्पादकता 57.87 प्रतिशत रही। लोकसभा इन 20 दिनों में चार विधेयक ही पारित कर पाई। राज्यसभा में तो 40.03 प्रतिशत ही कामकाज हो सका और पूरे सत्र में कुल दो विधेयक पारित हुए। बात सिर्फ विपक्ष के हंगामे की वजह से होने वाले व्यवधान की नहीं है, सरकार भी तब शर्मसार हो गयी जब एक देश एक चुनाव जैसा महत्वपूर्ण विधेयक पेश किये जाते समय मत विभाजन के दौरान सत्ता पक्ष के ही दो दर्जन सांसद अनुपस्थित थे। क्या ऐसे ही चलेगा हमारा संसदीय लोकतंत्र? क्या इसीलिए छह महीने पहले देश की 140 करोड़ जनता ने 543 प्रतिनिधियों को निर्वाचित करके भेजा था? हम 2047 तक भारत को विकसित बनाने की बात कर रहे हैं लेकिन संसद का महत्वपूर्ण समय और देश का कीमती धन बर्बाद कर रहे हैं? संसद के सत्र के दौरान भले सत्ता पक्ष और विपक्ष के अपने अपने राजनीतिक हित सध गये हों लेकिन देश की जनता का और संसद की छवि को तो नुकसान हो गया है। आखिर कैसे होगी इसकी भरपाई? देखा जाये तो वर्तमान संसद का पहला सत्र भी हंगामेदार रहा था। इससे पिछली लोकसभा के भी लगभग सभी सत्र हंगामेदार रहे थे। पिछले कुछ सत्रों की कार्य उत्पादकता पर गौर करें तो जो आंकड़े सामने आते हैं वह चिंताजनक स्थिति को दर्शाते हैं। सत्र की कार्य उत्पादकता का 45त्न, 35 प्रतिशत और 24 प्रतिशत के आसपास रहने से हमारी संसदीय प्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े होते हो रहे हैं। सदन में जो कामकाज होता है वो भी हंगामे के बीच होता है यानि शोरशराबे के बीच क्या नए कानून बन गए यह देश को पता ही नहीं चल पाता।

साथ ही संसद के कामकाज का प्रतिशत लगातार कम होते जाने से एक सवाल और खड़ा होता है कि कौन हैं वो लोग जो हमारी संसद को विफल दर्शाना चाहते हैं? कहीं हमारी संसदीय प्रणाली को विफल कराने के लिए कोई साजिश तो नहीं की जा रही है? विपक्ष लोकतंत्र बचाओ और संविधान बचाओ का आह्वान तो कर रहा है लेकिन लोकतांत्रिक प्रणाली वाले देश भारत में जनता के जनादेश पर निर्णय लेने वाला जो सर्वोच्च सदन है उसको चलने नहीं देता।

संविधान निर्माता अम्बेडकर के अपमान पर मचे सियासी तूफान के पूंजीवादी एजेंडे को ऐसे समझिए

कमलेश पांडे

लीजिए, हमारे विपक्षी नेताओं को एक और अपमानजनक मुद्दा मिल गया, ताकि संसद की जनहितकारी कार्यवाही को बाधित कर दिया जाए और सड़क से संसद तक हंगामा खड़ा करके लोगों को गोलबंद किया जाए। इससे मिशन आम चुनाव 2029 की विपक्षी राह आसान हो जाएगी। बताया जाता है कि एक संसदीय चर्चा के दौरान संसद में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने यह कह दिया है कि आजकल आंबेडकर का नाम लेना सियासी फैशन हो गया है। इतना नाम भगवान का लेते तो सात जन्मों के लिए स्वर्ग मिल जाता।

बकौल शाह, आंबेडकर-आंबेडकर-आंबेडकर क्यों कह रहे हो? आप अगर भगवान-भगवान कहेंगे तो 7 पीढ़ियां आपकी स्वर्ग में जाएंगी। बस इसी बयान को लेकर प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस के लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष व कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने गृहमंत्री अमित शाह और बीजेपी का विरोध करना शुरू कर दिया है। इस प्रकार विभिन्न दलों के समर्थन-विरोध और बचाव की सियासत के बीच संसद में धक्कामुक्की तक की नौबत आई गई और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी व उनके साथियों के विरुद्ध भाजपा नेताओं द्वारा एफआईआर तक दर्ज करवाना पड़ा। उधर, कांग्रेस ने भी भाजपा सांसदों के खिलाफ शिकायत दी है। इससे बिखरते इंडिया गठबंधन को थोड़ी सी राहत भी मिल गई, क्योंकि जो नेता राहुल गांधी का विरोध करते थे, वही अब उनकी भाषा पुन: बोलने लगे। चूंकि फरवरी 2025 में दिल्ली विधानसभा चुनाव और नवम्बर 2025 में ही बिहार विधानसभा चुनाव की सियासी वैतरणी पार करनी होगी, तो मुद्दा चाहिए। इसलिए कांग्रेस ने मनमाफिक मुद्दा ढूंढ लिया। भाजपा ने अपनी नीतियों से मुसलमानों को उसके लिए बुक ही कर दिया है और भाजपा से दलितों को हड़पने के लिए वह संविधान बदलने से लेकर अम्बेडकर के अपमान तक के मुद्दे को हवा दे चुकी है। ऐसा इसलिए कि कांग्रेस का %दम समीकरण% दलित-मुस्लिम गठजोड़ मजबूत हो। बता दें कि इसी को मजबूत करते करते लोकजनशक्ति पार्टी के संस्थापक स्व. रामविलास पासवान और उनके पुत्र केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान भाजपा की गोद में जा बैठे। वहीं, दम समीकरण की दूसरी प्रबल पैरोकार समझी गईं बसपा नेत्री और यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती की सियासी दुर्गति आपलोग देख ही रहे हैं, जिनपर भाजपा की बी टीम होने के आरोप लगते आए हैं। इसलिए इसी दम समीकरण पर अपना दावा मजबूत करते करते कांग्रेस क्या गुल खिलाएगी, अभी कहना जल्दबाजी होगी। क्योंकि इसी समीकरण ने लोकसभा चुनाव 2024 में उसे 10 वर्षों के सियासी दुर्दिन से मुक्ति दिलाई है। यह बात दीगर है कि कांग्रेस के नेता प्रतिपक्ष बनते ही उसकी सियासी सौतनें यानी इंडिया गठबंधन के साथी दलों की नींद उड़ चुकी है। इसलिए हरियाणा और महाराष्ट्र में दलितों के छिटकते ही विपक्षी आलोचना का केंद्रविन्दु बनी कांग्रेस ने अंबेडकर के अपमान को ऐसा तूल दिया और आक्रामक रणनीति अपनाई कि संसद में धक्कामुक्की कांड हो गया। इससे राहुल गांधी पुन: विपक्षी नेताओं के हीरो बनते प्रतीत हो रहे हैं। अब उम्मीद की जा रही है कि कांग्रेस इस मुद्दे से ही दिल्ली और बिहार के विधानसभा चुनावों के बाद 2027 में उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनाव और फिर 2028 में मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों को जीतने की रणनीति बनाएगी। चूंकि इसी बीच कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, पश्चिम बंगाल आदि विधानसभाओं के भी चुनाव इलेक्शन कैलेंडर के मुताबिक होंगे, इसलिए कांग्रेस जातिगत जनगणना के बाद अंबेडकर के अपमान को भी मुख्य मुद्दा बनाएगी। क्योंकि भाजपा भी इन्हीं दोनों मुद्दों पर कांग्रेस के ऊपर तार्किक सवाल उठाती आई है। राजनीतिक टिप्पणीकारों की बातों पर गौर करें तो राष्ट्रपति महात्मा गांधी, प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू, महात्मा गांधी के हत्यारोपी हिंदूवादी नेता वीर सावरकर, और अब संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ भीमराम अम्बेडकर के ऊपर हुई सियासी टीका-टिप्पणी कोई नई बात नहीं है, बल्कि नई बात तो यह है कि गांधी-नेहरू का अपमान सहते रहने वाली कांग्रेस ने अम्बेडकर के अपमान को सियासी मुद्दा बनाकर एक तीर से दो शिकार कर रही है।

पहला तो यह कि दलितवादी दलों और ओबीसी की राजनीति करने वाले दलों से वह मुद्दे लपक चुकी है और इसी को धार दे रही भाजपा को जन कठघरे में खड़ा करके अपना सियासी उल्लू सीधा करने की कवायद तेज कर चुकी है। अपने देखा होगा कि इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, राममनोहर लोहिया, वीपी सिंह, लालूप्रसाद, मान्यवर कांशीराम, मायावती, रामविलास पासवान, लालकृष्ण आडवाणी, अटलबिहारी बाजपेयी आदि अनगिनत नेताओं के ऊपर सियासी टिपण्णी हुई, लेकिन बात का इतना बतंगड़ कभी नहीं बना। कभी आजादी, कभी आरक्षण, कभी समता, कभी समरसता, कभी वामपंथ, कभी समाजवाद और कभी राष्ट्रवाद के सवाल पर सियासत हुई। रोटी कपड़ा और मकान के बाद शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मान की सियासत भी हुई। जय जवान, जय किसान से लेकर जय विज्ञान तक के उदघोष हुए। सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास तक की बातें हुईं। लेकिन जनता की माली हालत उबचुब करती रही। पिछले तीन दशकों में अमीरी और गरीबी की खाई हर रोज चौड़ी हो रही है। एक और कड़वी सच्चाई यह है कि निर्वाचित नेताओं की आय रॉकेट की गति से बढ़ रही है, पर समतामूलक समाज स्थापित करने के संवैधानिक प्रयत्न नदारत रहे। क्योंकि जब भी सर्वहितकारी कुछ बात शुरू हुई तो दलित, आदिवासी, ओबीसी और अल्पसंख्यकों के संवैधानिक अधिकारों को कानूनी ढाल बना दिया गया। कुछ लोगों को आरक्षण दिया गया और उनका समर्थन हासिल करके कहीं पारिवारिक राजनीति को मजबूत किया गया तो कहीं राजकोषीय लूट मचाई गई। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो यह कि कहीं कोई प्रशासनिक और न्यायिक संतुलन स्थापित करने की कोशिश नहीं की गई। या तो कानून स्वहित के अनुरूप बने या फिर परिभाषित किये गए। दुष्प्रभाव सबके सामने है। हिंसा-प्रतिहिंसा और असमानता हमारी नियति बन चुकी है।

यह कड़वी सियासी सच्चाई यह है कि सन 1990 के दशक के पूर्वार्द्ध से देश में लागू %नई आर्थिक नीतियों% के दुष्परिणाम स्वरूप भारतीय संसद जनहितकारी मुद्दों से अपना पिंड छुड़ाती हुई प्रतीत हो रही है और सिर्फ पूंजीवादी एजेंडों को पूरा करने की गरज से जनमानस के बीच भावनात्मक मुद्दों को हवा दे रही है। इन नीतियों को देश में लागू करने वाली कांग्रेस और फिर बाद में उसकी समर्थक बन चुकी भाजपा (स्वदेशी आंदोलन को भूलकर) ने पूंजीवादी राजनीति को इतनी हवा दी कि क्षेत्रीय सियासत ही हाशिए पर आ गई।

इसलिए क्षेत्रीय दलों को भाजपा और कांग्रेस के इस सियासी पेंच को समझना चाहिए, लेकिन ये भी इन दोनों दलों के गठबंधन के मोहरे बन चुके हैं। ऐसा सिर्फ इसलिए कि सियासत के लिए जो जरूरी आर्थिक खाद-पानी चाहिए, वो सिर्फ पूंजीवादी कम्पनियां ही पूरी कर सकती हैं। आप गौर कीजिए कि 1990 के दशक से शुरू हुए कम्पनी राज के बाद जीवन चर्या कितनी महंगी होती जा रही है। मानवीय संवेदनाओं से परे सबकुछ को मौद्रिक पैमाने पर तौलने की बाजारू प्रवृत्ति ने खान-पान, दवा-दारू, रहन-सहन से लेकर परिवहन तक को महंगा कर दिया और गुणवत्ता के मामलों में भगवान भरोसे छोड़ दिया।

निस्तेज विपक्ष देश को कब तक अंधेरों में धकेलेगा?

ललित गर्ग

विपक्ष बात-बात पर तू-तू, मैं-मैं करते हुए बात का बतंगड़ बनाकर देश का भारी नुकसान कर रहा है। संसद को चलने नहीं दे रहा है, आधे-अधूरे बयान के हिस्से को प्रचारित कर घटिया एवं सस्ती राजनीति करते हुए देश को गुमराह कर रही है। बेबुनियाद एवं भ्रामक मुद्दों को उछाल कैसे गुल खिलाये, कैसे देश को अंधेरों में धकेला जाये, इसी फिराक में कांग्रेस एवं समूचा विपक्ष दिनरात लगा है, इसका प्रमाण है गत दिवस संसद में गृह मंत्री अमित शाह के डा. आंबेडकर को लेकर दिए गए बयान पर विपक्ष का हंगामा, तीखी नोकझोंक एवं होहल्ला। इस हंगामे का आधार यह है कि गृह मंत्री ने यह कह कर आंबेडकरजी का अपमान कर दिया कि यदि आंबेडकर, आंबेडकर करने वाले इतना नाम भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता। मुश्किल यह है कि हंगामा करने वाले यह स्पष्ट नहीं कर पा रहे हैं कि आखिर ऐसा कहने से आंबेडकरजी का अपमान कैसे हो गया? विडम्बना देखिये कि आजादी के बाद से अब तक आंबेडकर का अपमान करने, तिरस्कार करने एवं उनकी उपेक्षा करने वाला दल एकाएक उनका इतना हिमायती कैसे हो गया? यह सारा हंगामा विपक्ष इसलिये कर रहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भारतीय जनता पार्टी ने आंबेकडर को शीर्ष राष्ट्रनायकों में शुमार कर किया है और उनकी नीतियों, सिद्धान्तों एवं मूल्यों को राजनीति का अहम हिस्सा बनाया है। विपक्ष डरा हुआ है कि भाजपा आंबेडकर को आजादी के बाद प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के बाद उचित स्थान देकर दलित समुदाय के हितों की वास्तविक चिन्ता की है, जिससे दलित वोट भाजपा के पक्ष में जाता हुआ दिख रहा है। इसलिये शाह के बयान को तोड़-मरोड एवं आधा-अधूरा प्रस्तुत कर बेवजह का हंगामा करने पर तुले विपक्ष एवं उनके नेताओं ने जो एवं जैसे तर्क दिए हैं, वे विचित्र ही नहीं, हास्यास्पद भी हैं।

बाबा साहेब आंबेडकर पर घडियाली आंसू बहाने वाला विपक्ष एवं विशेषत: कांग्रेस यह भूल रही है कि आंबेडकर का सर्वाधिक अपमान एवं उपेक्षा इन्हीं दलों ने की है। पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू आंबेडकर को पसन्द नहीं करते थे। क्योंकि आंबेडकर मुस्लिम तुष्टिकरण की कांग्रेस नीति से नाखुश थे। उनका मत था कि धर्म के आधार पर देश का विभाजन हुआ है, अत: सभी मुस्लिम को भारत छोड़ देना चाहिए? गांधी और नेहरू ने इस विचारधारा का विरोध किया? गांधी तो विरोध में भूख हड़ताल पर बैठ गए? बाबा साहेब ने गांधी से समझौता कर संविधान को मुस्लिम के अनुसार ड्राफ्ट कर दिया? फिर भी नेहरू बाबा साहेब के विरुद्ध लगातार लगे रहे। यहां तक आंबेडकर के चुनाव लड़ने पर नेहरू ने उनके खिलाफ कांग्रेस प्रत्याशी खड़ा कर उन्हें हरवा दिया? विडम्बना देखिये कि आंबेडकर के सचिव नारायण सदोबा काजरोलकर को उनके खिलाफ खड़ा कर दिया। कांग्रेस ने न केवल दो बार उन्हें चुनाव में हराया बल्कि केन्द्र सरकार में उनकी घोर उपेक्षा लगातार जारी रखी। इसी से नाराज होकर आंबेडकर ने मंत्री पद से इस्तिफा देते हुए नेहरू पर गंभीर आरोप लगाये। इतना ही नहीं आंबेडकर ने स्वयं के बनाये संविधान को जला देने की बात भी इसलिये कही थी कि संविधान का संचालन गलत हाथों में है।

इतिहास की इन त्रासद एवं विसंगतिपूर्ण

स्थितियों के बावजूद आखिर कांग्रेस किस आधार पर आंबेडकर की तस्वीरें लेकर संसद परिसर में विरोध कर रही है। अपने आरोप को पुष्ट करने के लिए विपक्ष और विशेष रूप से कांग्रेस नेता गृह मंत्री के बयान के एक हिस्से को तो प्रचारित कर रहे हैं, लेकिन उसके शेष हिस्से को सुनने के लिए तैयार नहीं, जिसमें उन्होंने कहा था कि डा. आंबेडकर का नाम लेने वालों ने किस तरह उनके विचारों के खिलाफ काम किया और उन्हें अपमानित करने में भी संकोच नहीं किया। लगता है कांग्रेस को यही नागवार गुजरा और इसी कारण वह संसद के भीतर-बाहर इस मामले को तूल देने में जुट गई। इसे तूल देने के लिए उसके नेताओं की ओर से संसद के दोनों सदनों में आज भी हंगामा बरपाया कि दोनों दलों के सांसदों के बीच मकर द्वार पर धक्कामुक्की में भाजपा सांसद प्रताप सारंगी के सिर में चोट देखी गई। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल सांसद ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी ने एक सांसद को धक्का दिया, जो मेरे ऊपर गिरे। आरोप पर जवाब देते हुए राहुल ने कहा कि हां! ऐसा हुआ। वे हमें प्रवेश द्वार पर रोकने की कोशिश रहे थे। ये तर्क एवं त्रासद स्थितियां संसदीय गरिमा को धुंधलाने वाली है। कांग्रेस के तर्कों का स्तर न केवल राजनीतिक विमर्श का गिराने वाला ही नहीं, बल्कि यह बताने वाले भी हैं कि नेतागण किस तरह तिल का ताड़ बनाने में माहिर हो गए हैं। कांग्रेस भाजपा के बारे में तथ्यहीन एवं भ्रामक अफवाहें फैला रही है। कांग्रेस नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक गरीब और बेरोजगारी का गीत गाते रहे हैं, लेकिन उनके शासनकाल में न तो गरीब खत्म हुए और न बेरोजगारी? नीयत में खोट और अनुभवहीनता का जब सत्ता प्राप्ति के संदर्भ में समन्वय हो जाता है, तो ऐसी हास्यास्पद स्थितियां निर्मित हो जाती हैं। भारत की राजनीति में इस समय यही स्थिति बन गई है।

राजनीतिक बहस का स्तर इतना छिछलादार, स्तरहीन एवं बेबुनियाद नहीं होना चाहिए। झूठ को जोर-जोर से चिल्लाकर कहने से वह सच नहीं हो जाता। यह अच्छा हुआ कि गृह मंत्री ने अपने बयान पर कोई सफाई देने के बजाय दो टूक यह कहना उचित समझा कि उनके पूरे वक्तव्य को सुना जाए। वैसे यह तय है कि विपक्षी नेता ऐसा नहीं करने वाले, क्योंकि उन्हें यही साबित करना है कि आंबेडकरजी का अपमान हो गया, संविधान खतरे में आ गया इसलिये गृहमंत्री को अपने पद से इस्तिफा दे देना चाहिए। आखिर इसे मूर्खतापूर्ण राजनीति न कहा जाए तो क्या कहा जाए? इस पर हैरानी नहीं कि राहुल गांधी को फिर से यह नजर आने लगा कि मोदी सरकार संविधान बदलने जा रही है।

गैस एसोसिएशन का अध्यक्ष चला रहा अवैध काउंटर

घरेलू गैस सिलेंडर की अफरातफरी, ब्लैकमार्केटिंग पर कार्रवाई, 30 सिलेंडर जब्त

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर के शारदा गैस एजेंसी में बड़े पैमाने पर घरेलू गैस सिलेंडर की अफरातफरी चल रही थी। खाद्य विभाग की टीम ने छत्तीसगढ़ एलपीजी गैस डिस्ट्रीब्यूटर एसोसिएशन के अध्यक्ष और शारदा गैस एजेंसी के संचालक सुभाष जायसवाल के अवैध काउंटर में छापेमारी कर 30 सिलेंडर जब्त की है।

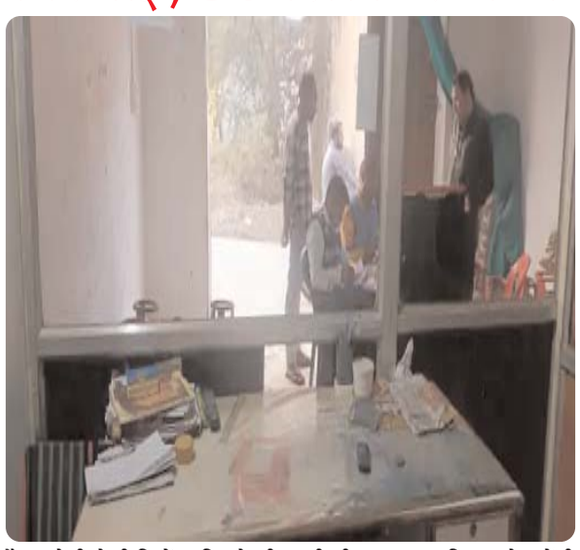

इंडियन ऑयल कंपनी ने काउंटर के अनुमति भी नहीं दी है। विभाग अब इस मामले की जांच कर रही है। शहर में घरेलू गैस सिलेंडर की धड़ल्ले से अफरातफरी की जा रही है। ब्लैकमार्केटिंग के साथ ही अवैध रूप से गैस की रिफिलिंग की लगातार शिकायतें मिल रही है, जिस पर खाद्य विभाग की टीम ने मंगला के महामाया पार्क में छापेमारी की।

12 भरा हुआ सिलेंडर बरामद: बताया जा रहा है कि शारदा गैस एजेंसी का संचालक अवैध काउंटर चला रहा था, जहां से टीम ने इंडेन कंपनी के 18 खाली गैस सिलेंडर और 12 भरे सिलेंडर बरामद किए। यहां शारदा गैस एजेंसी का कर्मचारी लव यादव मौजूद था। खाद्य विभाग की टीम ने जब सिलेंडरों के संबंध में दस्तावेज की मांगे, तो वह नहीं दिखा सका। इस दौरान खाद्य विभाग के अफसरों ने ऑयल कंपनी के अधिकारियों से जानकारी ली। तब पता चला कि शारदा गैस एजेंसी के महामाया पार्क स्थित काउंटर की अनुमति ही नहीं है।

जहां हुआ था हादसा, वहीं करता था गैस सिलेंडर की सप्लाई: बीते 15 दिसंबर को अवैध गैस सिलेंडर रिफलिंग के दौरान सिलेंडर का पाइप फटने से 14 साल का लड़का ओम यादव बुरी तरह से झुलस गया था। उसे गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया। खाद्य विभाग की जांच में पता चला है कि सरकंडा के उस बलदाऊ किचन केयर में शारदा गैस एजेंसी से ही गैस सिलेंडर सप्लाई की गई थी।

शारदा गैस एजेंसी के इसी काउंटर से अवैध रूप से सिलेंडर सप्लाई किया जा रहा था। इससे पहले बलदाऊ किचन केयर के संचालक बलदाऊ साहू ने भी शारदा गैस एजेंसी से ही सिलेंडर मिलने की बात अपने बयान में कही है। जिसके आधार पर खाद्य विभाग ने यहां छापेमारी की है।

पहले भी शारदा गैस एजेंसी में हुई थी अफरातफरी: शारदा गैस एजेंसी पर गड़बड़ियों की शिकायतों के चलते पहले राजस्व एवं खाद्य विभाग की संयुक्त रूप से कार्रवाई की थी। तब खाद्य विभाग ने एजेंसी से 935 गैस सिलेंडर बरामद किया था। प्रशासन के पास शिकायत पहुंच रही थी, कि एजेंसी के गोदाम में फायर सेफ्टी उपकरण की एक्सपायरी डेट निकल चुकी है।

टीम जब गोदाम पहुंची, तो वहां मौजूद स्टाफ से स्टॉक रजिस्टर मांगने पर नहीं दिया गया।

2 बच्चों के सामने पत्नी को मारकर फेंका

दम तोड़ने तक लाठी-मुक्के से किया हमला, घुमाने ले गया तो घाटी चढ़ने में थक गई थी

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में पति ने अपने 2 बच्चों के सामने पत्नी को पीट-पीटकर मार डाला। लाश को जंगल में ही फेंककर बच्चों के साथ वापस घर आ गया। घर में आकर परिजनों से कहा कि वह घाटी में अपने से गिर गई है। मामला बांगो थाना क्षेत्र के पतोड़ियाडांड का है।

मिली जानकारी के मुताबिक मृतिका का नाम गनपति (24) है। वहीं पति का नाम ?????विशाल आरमो (28) है। आरोपी ने अपने 3 साल के लड़के और ढाई माह की बच्ची के सामने वारदात को अंजाम दिया है।

क्या है पूरा मामला: दरअसल, 18 दिसंबर को पति अपनी पत्नी और बच्चों को गांव से 5 किलोमीटर दूर अरसिया गांव के जंगल में घुमाने ले गया था। इस दौरान घूमने के बाद चारों शाम को घर लौट रहे थे। पहाड़ी घाटी पार करते वक्त आरोपी की पत्नी थक गई थी। वह चल नहीं पा रही थी।

थककर बैठी थी तो मुक्के से मारा: इससे आरोपी पति विशाल आरमो को गुस्सा आ गया। उसने अपनी पत्नी गनपति को मुक्के से मारपीट करने लगा। वह डरकर चलने लगी, लेकिन थोड़ी दूर चलने के बाद वह फिर थक गई। घाटी में ही बैठ गई। कहने लगी कि पैर दर्द कर रहा है।

लाश को घाटी में ही ठिकाने लगाया: इतना सुनते ही पति फिर से गुस्से में आग बबूला हो गया। जंगल से डंडा तोड़ा और पत्नी को पीटने लगा। लाठी और हाथ-मुक्के से इतना पीटा कि वो बेहोश हो गई। आरोपी पति लगातार उसे पीटता रहा, जिससे उसकी जंगल में ही मौत हो गई। लाश को उसने घाटी में ही ठिकाने लगा दिया।

बच्चे और ढाई साल की बेटी को ले आया घर: वारदात के बाद आरोपी पति 3 साल के बच्चे और ढाई साल की बेटी को लेकर घर आ गया। घर वालों ने जब पत्नी के बारे में पूछा तो कह दिया कि वह घाटी में गिर गई। इससे परिजनों के होश उड़ गए। महिला के मायके वालों को सूचना दी गई।

आरोपी ने कबूल किया जुर्म: इस दौरान मृतिका के परिजनों ने दामाद पर शक होने पर बांगो पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची। 19 तारीख को जंगल से लाश को बरामद कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। शक के आधार पर आरोपी पति को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। आरोपी ने जुर्म कबूल कर लिया है।

कोर्ट ने आरोपी को भेजा जेल: बांगो थाना प्रभारी उषा सोंधिया ने बताया कि विशाल आरमो आदतन शराबी है। उसकी पहली पत्नी भी इसकी हरकतों से तंग आकर छोड़कर भाग गई थी। विशाल ने गनपति बाई से दूसरी शादी की थी। आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया है।

आबादी जमीन पर कचरे के खिलाफ एक्शन

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग-भिलाई एजेंसी। दुर्ग में नगर निगम द्वारा पुलगांव की आबादी जमीन पर डल रहे कचरे के खिलाफ लगाई गई याचिका पर एनजीटी ने एक्शन ले लिया है। एनजीटी ने नोटिस जारी करते हुए राज्य के आवास एवं पर्यावरण विभाग के सचिव, कमिश्नर दुर्ग, आयुक्त नगर निगम एवं पर्यावरण मंडल के सदस्य सचिव से जवाब मांगा है। जानकारी के अनुसार नगर निगम दुर्ग लंबे समय से पुलगांव की आबादी भूमि खसरे क्रमांक 148-1 में शहर से निकलने वाले कचरे को डंप करने का प्रयास किया जा रहा है। पार्षद सहित रहवासियों और कपड़ा व्यापारियों द्वारा कई दफा आबादी भूमि में कचरे को फेंकने के खिलाफ नाराजगी जताई गई है।

पार्षद ने दायर की याचिका: इसके बावजूद निगम प्रशासन ने इस नाराजगी को नजरअंदाज करते हुए फिर उक्त भूमि पर दो ट्रक कचरा फेंक दिया है। इस मामले की शिकायत वार्ड क्रमांक 55 की पार्षद हेमेश्वरी निषाद ने राष्ट्रीय हरित अधिकरण भोपाल के समक्ष एक याचिका दायर कर की थी।

पिता को चाकू से और बेटे को तीर से मारा

अधेड़ ने जमीन विवाद पर किया हमला, पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, दंतेवाड़ा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में जमीन विवाद की वजह से एक अधेड़ ने पिता-पुत्र पर जानलेवा हमला किया था। वारदात के बाद से वह फरार था। अब पुलिस ने उसे पकड़ लिया है। बताया जा रहा है कि अधेड़ ने पिता पर चाकू और उसके बेटे पर तीर से हमला किया था, जिससे दोनों काफी गंभीर रूप से घायल हो गए थे। मामला जिले के बारसूर थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, झुमुकलाल कश्यप (58) का उदयनार निवासी जयसिंह कश्यप और उसके बेटे मोसूराम कश्यप के बीच जमीन विवाद चल रहा था। वहीं 17 जून 2021 को इनके बीच हाथापाई हो गई थी। विवाद इतना अधिक बढ़ गया कि झुमुकलाल कश्यप ने जयसिंह कश्यप को अपने पास रखे एक धारदार हथियार से वार कर दिया और उसके बेटे को तीर से मार दिया।

3 साल बाद पकड़ में आया आरोपी: इस वारदात से दोनों पिता-पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गए थे। वहीं आरोपी मौके से फरार हो गया था। वारदात के करीब 3 साल बाद अब पुलिस को फरार आरोपी का क्लू मिला। वह जिले के एक ठिकाने में छिपा हुआ था। वहीं पुलिस को जानकारी मिलते ही जवानों को मौके के लिए निकाला गया था।

जिसेक बाद एक ठिकाने से उसे घेराबंदी कर गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

विंटर सीजन में ट्रेनों में कन्फर्म बर्थ के लिए मारामारी

वेटिंग लिस्ट 250-300 के पार, कोच्चुवेली एक्सप्रेस में एक एक्स्ट्रा जनरल कोच की सुविधा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। विंटर सीजन में ट्रेनों में कन्फर्म बर्थ के लिए मारामारी चल रही है। ऐसे में ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। रेलवे प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुए कोरबा से चलने वाली कोच्चुवेली एक्सप्रेस में एक जनरल कोच की सुविधा मुहैया कराने का फैसला किया है।

दरअसल, शीतकालीन अवकाश के दौरान ज्यादातर ट्रेनों में जगह नहीं मिल रही है। ऐसे में टूर पर जाने वाले यात्रियों को कन्फर्म बर्थ नहीं मिल रहा है। स्थिति यह है कि ट्रेनों में वेटिंग लिस्ट 250 से 300 के पार चल रहा है। ऐसे में जनरल कोच में भी यात्रियों को जगह नहीं मिल रही है। यही वजह है कि ट्रेनों में एक्स्ट्रा कोच लगाने की डिमांड बढ़ गई है।

कोच्चुवेली एक्सप्रेस में एक जनरल कोच की सुविधा: रेलवे प्रशासन की ओर से यात्री सुविधाओं में निरंतर वृद्धि करने का दावा किया जा रहा है। इसी क्रम में रेलवे प्रशासन ने यात्रियों की बेहतर यात्रा सुविधा के लिए गाड़ी संख्या 22648/22647 कोच्चुवेली-कोरबा-कोच्चुवेली एक्सप्रेस में एक जनरल कोच की सुविधा स्थाई रूप से उपलब्ध कराई जा रही है।

यह सुविधा गाड़ी संख्या 22648 कोच्चुवेली-कोरबा में 19 दिसंबर से और गाड़ी संख्या 22647 कोरबा-कोच्चुवेली एक्सप्रेस में 21 दिसंबर से उपलब्ध रहेगी। इस अतिरिक्त जनरल कोच के जुडने से इस गाड़ी में 4 जनरल कोच की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी।

इससे ज्यादा से ज्यादा यात्रियों को जनरल कोच में यात्रा करने की सुविधा मिलेगी। साथ ही सामान्य कोच में यात्रियों की भीड़ का दबाव कम होगा और यात्रीगण सुगम एवं आरामदायक यात्रा कर कर सकेंगे।

24 दिसंबर को बिलासपुर-टाटा रद्द: दक्षिण पूर्व रेलवे के चक्रधरपुर मंडल के चक्रधरपुर-लोटापहाड़ रेलवे स्टेशनों के बीच एफओबी गर्डर लांचिंग के लिए मेगा ब्लॉक लिया जाएगा, जिसके फलस्वरूप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से संबन्धित निम्न गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। इस काम के चलते रेलवे ने 24 दिसंबर को बिलासपुर और टाटा से चलने वाली गाड़ी संख्या 18113/18114 टाटानगर-बिलासपुर-टाटानगर एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

देरी से चलने वाली गाड़ियां: 23 दिसंबर को पुणे से चलने वाली 20821 पुणे-सांतरागाछी एक्सप्रेस 2 घंटे 30 मिनट देरी से रवाना होगी।

24 दिसंबर को को हावड़ा से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 12262 हावड़ा-सीएसएमटी दुरन्तो एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय से 6 घंटे देरी से रवाना होगी।

23 दिसंबर को हजूर साहिब नान्देड से चलने वाली 12767 हजूर साहिब नान्देड- सांतरागाछी एक्सप्रेस 2 घंटे 30 मिनट देरी से रवाना होगी।

भगवान के साक्षात दर्शन करवाने के नाम पर ठगी

मरवाही में महिलाओं के मंगलसूत्र उतरवाए, पैदल चलने कहा, फिर पर्स लेकर भागे

मीडिया ऑडीटर, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही एजेंसी। मरवाही में भगवान के साक्षात दर्शन कराने के नाम पर 2 महिलाओं से लाखों रुपए के आभूषणों की लूट हो गई। मामले में पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। पुलिस ठगों की तलाश में जुटी हुई है।

मामला मरवाही थाना क्षेत्र का है। जहां राधा कृष्ण मंदिर के पास दो महिलाएं श्वेता जायसवाल और सुनीता साहू मंदिर के पास ही बैठी हुई थी। इसी दौरान बाइक में 3 अज्ञात लोग वहां पहुंचे और महिलाओं से बातचीत कर साक्षात भगवान के दर्शन करा देने का दावा करने लगे। साथ ही खुद को भगवान का दूत भी अपने आपको बताने लगे।

दूसरी महिला ने भगवान के दर्शन होने का किया दिखावा: मंदिर के पास बैठी एक अन्य महिला से ठगों ने उनके मां के बारे में पूछा और बीमार होने की बात कही। इसके बाद भगवान के दर्शन हो जाने का झूठा दिखावा किया। यह सब देख दोनों महिलाए भी ठगों की बातों में आ गई।

आभूषण को उतरवा कर पर्स में रखवा दिया: जब महिलाएं उनके झांसे में आ गई तो ठगों ने भगवान का दर्शन करवाने की बात कहते हुए महिलाओं के पहने हुए आभूषण को उतरवा कर पर्स में रखवा दिया। जब महिलाएं आभूषण उतारने में संकोच करने लगी तो ठगों ने आभूषण पहने रहने में भगवान के दर्शन न होने का डर भी दिखाया।

इन सब के बीच चालाकी से ठगों ने दोनों महिलाओं से लगभग 1 लाख के 14 ग्राम सोने का मंगलसूत्र, 3 ग्राम सोने का मंगलसूत्र और मोबाइल सभी को पर्स में रखवा दिया। इसके बाद महिलाओं से कुछ दूर पैदल चलने के लिए कहा।

बाइक सवार ठग मौके से गहने लेकर भागे: ठगों ने कहा कि पैदल चलते ही कुछ दूर में भगवान के साक्षात दर्शन होंगे। महिलाएं जैसे ही कुछ दूर पैदल चली। बाइक सवार ठग मौके से सभी गहने लेकर भाग गए। इसके बाद पीड़ित महिलाओं ने मरवाही पुलिस से मामले की शिकायत की।

प्रेमी के साथ भागी नाबालिग बेटी, माता-पिता ने लगाई आग

80 प्रतिशत झुलसे, धोखा खाने पर प्रेमिका ने भी खाया जहर

मीडिया ऑडीटर, बलरामपुर एजेंसी। बलरामपुर जिले से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जिसमें बेटी की हरकतों और प्रेम प्रसंग से आहत माता-पिता ने खुद को आग के हवाले कर दिया। इस दर्दनाक घटना में पति-पत्नी दोनों गंभीर रूप से झुलस गए हैं। उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। फिलहाल, उनका इलाज अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज में चल रहा है।

जानकारी के मुताबिक, नाबालिग बेटी दूसरे समुदाय के एक लड़के के प्यार में पड़ गई थी और मनमानी कर रही थी। नाबालिग बेटी के इश्क के कारण उसके माता-पिता ने उसे कई बार समझाने की कोशिश की, लेकिन वह एक भी बार सुनने को तैयार नहीं थी।

इसके बाद नाबालिग बेटी अपने कथित प्रेमी के साथ घर से भाग गई। नाबालिग को जब प्यार में धोखा मिला तो उसने जहर खाकर आत्महत्या करने का भी प्रयास किया था। नाबालिग बेटी के कम उम्र में ही इश्क के जाल में फंसना माता-पिता को नागवार गुजरा। आहत होकर माता-पिता ने खुद को जिंदा जलाने की कोशिश की।

तहसीलदार के सामने बयान: गंभीर रूप से झुलसे माता-पिता ने वाड्रफनगर तहसीलदार के सामने दिए गए बयान में खुलासा किया। कुछ लोग उन्हें प्रताड़ित कर रहे थे। इस प्रताड़ना से तंग आकर ही उन्होंने यह आत्मघाती कदम उठाया। पुलिस अब उन व्यक्तियों की पहचान और उनके खिलाफ कार्रवाई की तैयारी में जुटी है।

वहीं माता-पिता को घटना के तुरंत बाद अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। डॉक्टर्स के अनुसार, दोनों 80 प्रतिशत से ज्यादा झुलसे हुए हैं। उनकी स्थिति गंभीर बनी हुई है। चिकित्सा टीम का कहना है कि उनकी जान बचाने की पूरी कोशिश कर रही है।

पुलिस की कार्रवाई और आरोपी की गिरफ्तारी: घटना में पुलिस ने नाबालिग बेटी के बयान के आधार पर नाबालिग प्रेमी को हिरासत में लेकर संप्रेषण गृह भेजा दिया है। फिलहाल, गंभीर रूप से घायल दंपति का उपचार मेडिकल कॉलेज अंबिकापुर में चल रहा है। पुलिस ने इस मामले में गहन जांच शुरू कर दी है।

नामर्द कहने पर प्राइवेट-पार्ट कुचलकर हत्या

हत्यारों ने नग्न कर फेंकी लाश, 2 साल बाद 2 कातिलों को उम्रकैद

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग एजेंसी। छत्तीसगढ़ के भिलाई में 3 हत्यारों ने नामर्द कहने पर एक युवक को मार डाला। बताया जा रहा है कि तीनों हत्यारों ने युवक की प्राइवेट-पार्ट को पत्थर से कुचलकर हत्या की, फिर नग्न कर शव को ग्राउंड में फेंक दिया। 2 साल बाद कोर्ट ने 2 हत्यारों को उम्र कैद की सजा सुनाई है। मामला खुर्सीपार थाना इलाके का है।

तत्कालीन थाना प्रभारी खुर्सीपार दुर्गेश शर्मा ने बताया कि ये मामला 6-7 फरवरी 2022 का है। उन्हें सूचना मिली थी कि आईटीआई ग्राउंड में एक युवक की लाश पड़ी है। जब वह मौके पर पहुंचे और जांच की तो पता चला कि मृतक का नाम श्याम कुमार उर्फ मोनू है। वह खुर्सीपार का रहने वाला था।

400 से अधिक सीसीटीवी कैमरों खंगाले गए: खुर्सीपार पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू की। 400 से अधिक सीसीटीवी कैमरे खंगाले गए, लेकिन पुलिस के हाथ कुछ नहीं लगा। पुलिस ने बताया कि मामला पूरी तरह से ब्लाइंड था।

दुर्गेश शर्मा ने जब लोगों से बारीकी से पूछताछ की तो उन्हें एक पुख्ता क्लू मिला। मिले क्लू के आधार खुर्सीपार पुलिस टीम ने 72 घंटों के अंदर तीन आरोपी बलराम क्षत्रिय, झुमन साहू और यशवंत कुमार यादव को गिरफ्तार किया।

शराब पिलाई, फिर नशे में मार डाला: टीआई दुर्गेश शर्मा ने बताया कि आरोपी बलराम क्षत्रिय और झुमन साहू ने पहले से मर्डर की साजिश रची थी। इसके बाद साजिश के मुताबिक उन्होंने श्याम कुमार उर्फ मोनू को शराब पिलाने के बहाने 6 फरवरी की रात आईटीआई ग्राउंड में बुलाया। वहां बैठक कर सभी ने शराब पार्टी की और फिर उसकी हत्या कर दी।

पत्नी के बारे में गलत कमेंट करने पर आया गुस्सा: आरोपी बलराम ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि, मृतक श्याम उसकी पत्नी के बारे गलत कमेंट करता था और उसे नामर्द कहता था। इसलिए उसने उसके प्राइवेट-पार्ट को कुचलकर उसकी हत्या की। बाद में पहचान छिपाने की नीयत से उसके सिर को भी पत्थर से कुचल दिया। हत्या के बाद साक्ष्य छिपाने में उन्होंने अपने साथी जामुल निवासी यशवंत कुमार यादव की मदद ली थी।

न्यायालय ने सुनाई आजीवन कारावास की सजा: अपर सत्र न्यायाधीश दुर्ग श्यामवती मरावी की अदालत ने मामले की सुनवाई की। कोर्ट से आरोपी बलराम क्षत्रीय और झुमन साहू को सश्रम आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। वहीं मदद करने पर आरोपी यशवंत कुमार यादव को 4 साल सश्रम कारावास और जुर्माना लगाया है। सरकार की ओर से अपर लोक अभियोजक अरविंद कुमार चंदेल दुर्ग ने मामले की पैरवी की।

बस ने स्कूटी को मारी टक्कर, 1 की मौत

बस के टायर के नीचे आया सिर, युवक ने मौके पर तोड़ा दम

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में शुक्रवार की शाम बस और स्कूटी की जोरदार टक्कर हो गई। हादसा इतना जबरदस्त था कि स्कूटी सवार युवक का सिर बस के टायर के नीचे आ गया। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मामला बकावंड थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, युवक का नाम परमेश्वर नाग बताया जा रहा है। परमेश्वर बकावंड इलाके में एक बिल्डिंग वर्कशॉप में काम करता था। शुक्रवार की शाम स्कूटी से कहीं जा रहा था। इसी बीच रास्ते में एक तेज रफ्तार बस की चपेट में आ गया।

पंजाब में मल्टीस्टोरी बिल्डिंग गिरी

मोहाली (एजेंसी)। पंजाब के मोहाली में शनिवार शाम को मल्टीस्टोरी बिल्डिंग गिर गई। मलबे में 15 लोगों के दबे होने की आशंका है। पुलिस-प्रशासन ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दिया है। एनडीआरएफ की टीम भी पहुंच गई है। एंबुलेंस भी तैनात कर दी गई हैं। घटना गुरुद्वारा सोहाना साहिब के पास शाम करीब 4:30 बजे हुई। लोगों के मुताबिक ये बिल्डिंग 4 मंजिला थी। इसमें 3 मंजिलों पर पीजी और ग्राउंड फ्लोर में जिम चल रहा था। इसके बगल में बेसमेंट की खुदाई चल रही थी, जिससे बिल्डिंग की नींव कमजोर हो गई और वह गिर गई। जिस वक्त बिल्डिंग गिरी, उस वक्त जिम के खुले होने की सूचना है। ऐसे में मलबे में जिम में आए लोगों के दबे होने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि अभी इस बारे में औपचारिक पुष्टि नहीं हुई है। प्रशासन जिम प्रबंधकों से संपर्क कर रहा है। स्थानीय लोगों ने बताया कि जो मल्टीस्टोरी बिल्डिंग गिरी है, वह करीब 10 साल पुरानी थी। उधर, मोहाली की एसडीएम दमनदीप कौर ने बताया कि स्थानीय लोग करीब 15 लोगों के दबे होने के बारे में बता रहे हैं। वहीं आनंदपुर साहिब से सांसद मालविंदर कंग ने कहा कि ऐसा पता लगा कि यहां जिम था, जहां युवा एक्सरसाइज करने आते थे। अभी यह क्लियर नहीं हुआ कि उस वक्त इसमें कोई था या नहीं। अभी पुलिस की टीमें रेस्क्यू में लगी हुई हैं। एनडीआरएफ की टीम को भी बुला लिया गया है।

दिल्ली शराब घोटाला- केजरीवाल के खिलाफ केस चलेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना ने शनिवार को प्रवर्तन निदेशालय को शराब नीति मामले में अरविंद केजरीवाल के खिलाफ केस चलाने की इजाजत दे दी। ईडी ने 5 दिसंबर को एलजी से केजरीवाल के खिलाफ ट्रायल चलाने की अनुमति मांगी थी। पूर्व मुख्यमंत्री के खिलाफ ईडी ने इस साल मार्च में प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग के तहत केस दर्ज किया था। 21 मार्च को 4 घंटे की पूछताछ के बाद केजरीवाल को अरेस्ट किया गया था। केजरीवाल को इस केस में जमानत मिल गई थी, लेकिन श्वष्ठ ट्रायल शुरू नहीं कर पाई थी। इधर, केजरीवाल के खिलाफ केस चलाने की अनुमति पर आप के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने कहा- श्वष्ठ मंजूरी की कॉपी क्यों नहीं दिखा रही है। बाबा साहब के अपमान के मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिए इन्हें जुमलेबाजी बंद करनी चाहिए।

युवा उद्यमियों को प्रोत्साहन देने मध्यप्रदेश ने किया अनुकूल वातावरण का निर्माण-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि युवा उद्यमियों को भारत, युवा उद्यमियों के परिश्रम से विश्व पटल पर एक अलग पहचान बना रहा है। विश्व में हमारे देश में सबसे अधिक युवा शक्ति है। युवाओं के हाथों में आने वाले समय की बागडोर है। हमारे देश के युवाओं के भविष्य की तरफ बढ़ते हुए कदम देश को विकास के पथ पर तेज गति से आगे ले जा रहा हैं। स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए सरकार के द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। निवेश और स्टार्ट-अप को सरकार के द्वारा लगातार प्रोत्साहन देकर मदद की जा रही है। हम विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को उज्जैन में यंग एंटरप्रेन्योर समिट-2024 में युवा उद्यमियों को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं के पैरों में गति, हाथों में शक्ति है और भविष्य के तरफ लक्ष्य को देखने की दृष्टि है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के पास युवा उद्यमियों के लिए स्टार्ट-अप के लिए बजट में पर्याप्त धनराशि है। मुख्यमंत्री डॉ.

यादव ने कहा कि वर्तमान समय नवाचार का है। युवा अधिक से अधिक स्वरोजगार स्थापित कर उद्यमी बने। उन्होंने कहा कि स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए सरकार निरंतर काम कर रही है। हमारा भारत युवा शक्ति के अधिक्य के साथ विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। उन्होंने कहा कि उज्जयिनी नगरी सर्वगुण सम्पन्न है। उज्जैन की देश में पहचान बनी है। निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए छोटे-छोटे स्थानों पर भी समिट के कार्य किए जा रहे हैं। उद्यमियों को अपने व्यवसाय में वृद्धि के लिए सरकार हरसंभव मदद करेगी। उन्होंने कहा कि उद्यमी देश-प्रदेश में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन्न उद्यमियों के द्वारा लगाए गए स्टॉल का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवा उद्यमी सम्मेलन के आयोजकों, प्रतिभागियों के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आज का कार्यक्रम। उद्यमियों के बीच नवाचार, महत्वाकांक्षा और विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित होगा। यह सम्मेलन आत्म-निर्भरता की भावना को दर्शाता है और एक समृद्ध एवं प्रगतिशील मध्यप्रदेश के दृष्टिकोण को पूरा करने की दिशा में सहायक होगा। उद्यमिता आर्थिक विकास की नींव है और युवा प्रतिभाओं को पोषित करना, परिवर्तन और नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है। इस तरह के आयोजनों से हम अगली पीढ़ी को बड़ा सोचने, साहसी कदम उठाने और राज्य और राष्ट्र के समग्र विकास में योगदान करने के लिए सशक्त बनाते हैं। इस अवसर पर उज्जैन के प्रभारी एवं कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल, विधायक श्री सतीष मालवीय, महापौर श्री मुकेश टटवाल, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, श्री विवेक जोशी, श्री बहादुर सिंह बोरमुण्डला, श्री सत्यनारायण खोईवाल, प्रमुख सचिव श्री राघवेन्द्र सिंह, श्री चन्द्रमोली शुक्ला, उद्योगपति आदि उपस्थित थे।

संजय राउत बोले-मुंबई हमारी ताकत, बीएमसी चुनाव अकेले लड़ेंगे

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में हार के बाद शिवसेना (उद्धव गुट) के नेता संजय राउत ने शनिवार को पुणे में कहा कि उनकी पार्टी मुंबई महानगर पालिका चुनाव अकेले लड़ेगी। इससे महाविकास अघाड़ी पर कोई असर नहीं पड़ेगा। राउत ने कहा, %कार्यकर्ताओं की इच्छा है कि महानगर पालिका चुनाव अकेले लड़ा जाए।% राउत के बयान को लेकर एमवीए के सहयोगी दल सपा और कांग्रेस ने भी कहा कि वे अकेले चुनाव लड़ने को तैयार हैं। महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा- लोकल बॉडी चुनाव गठबंधन में हम पहले भी अकेले लड़े हैं। इस मामले में बैठकर चर्चा करेंगे। वहीं, महाराष्ट्र समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अबू आजमी भी बीएमसी चुनाव अकेले लड़ने की घोषणा कर चुके हैं। आजमी ने कहा था कि समाजवादी पार्टी नफरत फैलाने वालों के साथ नहीं रह सकती और बीएमसी चुनाव में अकेले लड़कर अपनी ताकत दिखाएगी। उन्होंने शिवसेना को भाजपा की बी टीम बताया था। राउत बोले- मराठियों के लिए चुनाव लड़ेंगे राउत ने कहा कि एमवीए गठबंधन के सहयोगी दलों ने एक साथ चुनाव लड़ने पर कोई निर्णय नहीं लिया है। अभी तक कोई भी नगर निगम चुनाव गठबंधन में नहीं लड़ा गया है। जब कांग्रेस-एनसीपी और शिवसेना-भाजपा के बीच गठबंधन था तब भी चुनाव अकेले लड़े गए थे। उन्होंने कहा कि ये अलग तरह के चुनाव हैं। इससे स्थानीय कैडर मजबूत होता है। इसका इस्तेमाल लोकसभा-विधानसभा चुनावों में किया जाना चाहिए। जिस तरह से मराठी लोगों पर हमले हो रहे हैं, सब देख रहे हैं। मराठियों के लिए हमारी शिवसेना अकेले लड़ेगी।

दान पेटी में गिरा आईफोन, मंदिर ने अपनी संपत्ति बताया

चेन्नई (एजेंसी)। तमिल फिल्म पालयथम्मन में एक महिला गलती से अपने बच्चे को मंदिर की हुंडी (दान पेटी) में गिरा देती है और बच्चा मंदिर की संपत्ति बन जाता है। ऐसी ही घटना तमिलनाडु के चेन्नई के पास थिरुपुरुर के अरुलमिगु कंदस्वामी मंदिर में हुई है। विनयागपुरम के रहने वाले दिनेश परिवार सहित नवंबर में मंदिर दर्शन के लिए आए थे। जेब से चढ़ावा निकालते वक्त उनका आईफोन दान पेटी में गिर गया था। इसके बाद उन्होंने मंदिर

प्रशासन से संपर्क कर मोबाइल वापस करने को कहा था। मंदिर प्रशासन ने कहा कि दान पेटी दो महीने में एक बार खोली जाती है। इसके बाद दिनेश मंदिर से खाली हाथ लौट आए थे। 20 दिसंबर को मंदिर की दान पेटी खोली गई। इसमें मोबाइल मिला। मंदिर प्रशासन ने दिनेश को इसकी जानकारी दी। प्रशासन ने उनसे कहा कि मोबाइल वापस नहीं मिलेगा, क्योंकि परंपरा के मुताबिक दान पेटी में आई हुई हर चीज मंदिर के देवता के खाते में जाती है। आप अपना सिम कार्ड और फोन डेटा ले सकते हैं। हालांकि, दिनेश की मांग मोबाइल वापस लौटाने की है।

जयपुर एलपीजी टैंकर ब्लास्ट में अब तक 14 मौतें

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में एलपीजी टैंकर ब्लास्ट के हादसे में शनिवार को दो और मौत हुई हैं। हादसे में मरने वालों की संख्या अब 14 हो गई है। शुक्रवार को जयपुर के अजमेर रोड पर हुए एक्सीडेंट में 5 लोग मौके पर ही जिंदा जल गए थे। वहीं, 8 लोगों ने सवाई मानसिंह हॉस्पिटल में इलाज के दौरान दम तोड़ा। एक मौत जयपुरिया हॉस्पिटल में हुई है। दिल्ली पब्लिक स्कूल के पास हुए एक्सीडेंट में झुलसे 27 लोग अब भी हॉस्पिटल में एडमिट हैं। इनमें 7 वेंटिलेटर पर हैं। इस हादसे में 25 लोग 75 फीसदी तक झुलसे हैं। सवाई मानसिंह हॉस्पिटल पहुंचे 5 शवों की अब तक

पहचान नहीं हो सकी है। परिजनों ने शव की पहचान के लिए अपना डीएनए सैंपल दिया है, जिसे डॉक्टर ने फॉरेंसिक लैब भिजवाया है। दरअसल, शुक्रवार सुबह भारत पेट्रोलियम का टैंकर अजमेर से जयपुर की तरफ आ रहा था। करीब 5.44 मिनट पर दिल्ली पब्लिक स्कूल के सामने टैंकर ने यू-टर्न लिया। इस दौरान जयपुर से अजमेर जा रहा ट्रक उससे भिड़ गया।

मुंबई नाव हादसा-पैरेंट्स बच्चों को समुद्र में फेंकना चाहते थे

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में 18 दिसंबर को हुए नाव हादसे में मौत का आंकड़ा 15 पहुंच गया। हादसे के चौथे दिन शनिवार को 7 साल के बच्चे का शव मिला। सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन खत्म हो गया है। गेटवे ऑफ इंडिया से एलीफेंटा जा रही पैसेंजर बोट और नेवी की स्पीड बोट टकराकर डूब गई थी। दोनों में कुल 113 लोग सवार थे, जिसमें 98 को बचाया गया था। रेस्क्यू टीम में शामिल एक सीआईएसएफ कॉन्स्टेबल ने शनिवार को बताया कि बोट में सवार कुछ पैरेंट्स अपने बच्चों को समुद्र में फेंकना चाहते थे। उन्हें लग रहा था कि बोट डूब रही है, पानी में फेंकने से बच्चे शायद बच जाएं। उन्हें लग रहा था कि बच्चों को बचाने के लिए मदद जल्दी पहुंच जाएगी। वहीं, एक कार्गो शिप के ड्राइवर ने बताया- मेरी बोट की कैपेसिटी 12 लोगों की थी, लेकिन मैंने अपने अनुभव पर भरोसा करते हुए 56 लोगों को बोट में चढ़ाया और उन्हें किनारे तक पहुंचाया। यह बहुत बड़ा एक्सीडेंट था। महिलाएं-बच्चे चिल्ला रहे थे। सभी बोट में चढ़ना चाहते थे। 18 दिसंबर को दोपहर करीब 3:30 बजे नेवी की स्पीड बोट पैसेंजर बोट से टकराई, जिसके बाद पैसेंजर बोट डूबने लगी।

उत्तराखंड में लैंडस्लाइड,नेशनल हाइवे बंद

नई दिल्ली/श्रीनगर (एजेंसी)। उत्तराखंड के पिथौरागढ़ के धारचूला में शनिवार दोपहर को लैंडस्लाइड हुई। इससे नेशनल हाईवे बंद हो गया। कई वाहन जाम में फंस गए। हाईवे से मलबा हटाने का काम जारी है। पुलिस ने कहा कि किसी के घायल होने की सूचना अभी तक नहीं मिली है। उधर, जम्मू-कश्मीर में आज से चिल्लई कलां की शुरुआत हुई है। चिल्लई फारसी शब्द है, हिंदी में इसका मतलब बहुत अधिक ठंड होता है। अब अगले 40 दिन यहां बहुत ज्यादा बर्फबारी होगी। श्रीनगर में तापमान -8.5 डिग्री तक पहुंच चुका है। यहां 133 साल में तीसरी बार पारा इतने नीचे पहुंचा है। मौसम विभाग ने बताया कि मध्य प्रदेश में बर्फिली हवाओं का असर खत्म हो गया है। इसलिए फिलहाल यहां सर्दी से राहत रहेगी, लेकिन 4 दिन बाद

तापमान में फिर गिरवाट शुरू होगी। राजस्थान में शनिवार सुबह घना कोहरा छाया रहा। सीकर में विजिबिलिटी 50 मीटर दर्ज की गई। उत्तर प्रदेश में भी कई जिलों में शीतलहर का अलर्ट जारी किया गया है। राज्य में सबसे ज्यादा सर्दी कानपुर में पड़ रही है। यहां तापमान 5.6ए सेल्सियस दर्ज किया गया।

शाह बोले- नॉर्थ-ईस्ट में अब उग्रवाद खत्म

अगरतला (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि नॉर्थ-ईस्ट में अब उग्रवाद खत्म हो गया है। इसलिए लोगों को जल्दी न्याय दिलाने के लिए पुलिस का दृष्टिकोण बदलने का वक्त आ गया है। हमें एफआईआर दर्ज होने से 3 साल के अंदर न्याय दिलाने की जरूरत है। शाह त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में नॉर्थ-ईस्ट काउंसिल के 72वें प्लेंट्री सेशन (पूर्ण अधिवेशन) में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 साल में 20 शांति समझौतों पर साइन करके नॉर्थ-ईस्ट में शांति लाई है। इस दौरान 9 हजार उग्रवादियों ने हथियार डाले हैं। केंद्र ने नॉर्थ-ईस्ट में रेलवे पर 81,000 करोड़ रुपए और सड़क नेटवर्क पर 41,000 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। इस अवसर पर नॉर्थ-ईस्ट डेवलपमेंट मिनिस्टर ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ-साथ नॉर्थ-ईस्ट के सभी आठ राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री और सीनियर अधिकारी भी मौजूद थे। 2008 के बाद यह दूसरी बार है जब अगरतला में यह प्लेंट्री सेशन हो रहा है। एनईसी नॉर्थ-ईस्ट के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नोडल एजेंसी है।

इसमें अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा शामिल हैं।

एमसीडी बोला- दिल्ली के स्कूल बांग्लादेशी छात्रों की पहचान करें

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के सरकारी स्कूलों में बांग्लादेशी स्टूडेंट्स की पहचान की जाएगी। म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन ऑफ दिल्ली के डिप्टी कमिश्नर बीपी भारद्वाज ने इस संबंध में शिक्षा विभाग के डायरेक्टर को निर्देश जारी किया है। इसके अलावा डिप्टी कमिश्नर ने स्वास्थ्य विभाग को इनके बर्थ सर्टिफिकेट नहीं बनाने के निर्देश दिए हैं। साथ ही सभी जोन के असिस्टेंट कमिश्नर से कहा है कि अगर बांग्लादेशी अप्रवासियों ने अवैध निर्माण कर लिया है तो उसे गिराया जाए। 31 दिसंबर तक कार्रवाई की रिपोर्ट मांगी गई है। 1. वेरिफिकेशन अभियान चलाएं दिल्ली में अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के मुद्दे को लेकर श्वष्ठ ने शनिवार को

भी बैठक की है। एमसीडी के डिप्टी कमिश्नर बीपी भारद्वाज ने कहा कि शिक्षा विभाग को अवैध बांग्लादेशियों की पहचान करनी चाहिए और उन्हें नगर निगम के स्कूलों में एडमिशन लेने से रोकने के लिए कदम उठाने चाहिए।

उन्होंने निर्देश दिया कि बांग्लादेशी छात्रों की पहचान करने के लिए वेरिफिकेशन अभियान चलाना चाहिए। 2. पहले जारी बर्थ सर्टिफिकेट की जांच करें एमसीडी ने स्वास्थ्य विभाग को भेजे नोटिस में अवैध बांग्लादेशियों के जन्म प्रमाण पत्र नहीं बनाने के आदेश दिए हैं। भारद्वाज ने कहा कि जिन बांग्लादेशियों के जन्म प्रमाण पत्र पहले जारी हो चुके हैं उनकी पहचान के लिए भी वेरिफिकेशन अभियान चलाया जाए। सभी जोनल स्वास्थ्य अधिकारियों को आदेश दिए गए कि वे नए आवेदनों की गंभीरता से जांच करें और तब ही स्वीकार करें।

देश में पराली से बनी पहली सड़क का उद्घाटन, गडकरी बोले- पराली से सीएनजी भी बनाई जा रही

नागपुर (एजेंसी)। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने शनिवार को बायो-बिटुमेन (पराली से बना डामर) से बनी देश के पहली सड़क का उद्घाटन किया। यह नागपुर के मानसर में नेशनल हाईवे-44 का हिस्सा है। इस दौरान गडकरी ने कहा कि इससे प्रदूषण कम करने में मदद मिलेगी। वेस्ट को वैल्यू (पैसा) में बदला जा सकेगा। किसान अब अन्नदाता और ऊर्जादाता के साथ ही बिटुमेनदाता भी बनेंगे। देश में बायो वेस्ट से सीएनजी बनाने के 400 प्रोजेक्ट प्रोसेस में हैं। इनमें 40 पूरे हो चुके हैं, जिनमें पराली से सीएनजी बनाई जा रही है। इन प्रोजेक्ट्स में कुल

60 लाख टन पराली का उपयोग हुआ है। अब हम चावल के भूसे से भी सीएनजी बना रहे हैं। सीएनजी पेट्रोल से सस्ती है। इससे प्रदूषण भी कम होता है, साथ ही पैसे की बचत होती है। इससे किसानों को काफी फायदा होगा। देश में डामर की कमी पूरी होगी, अभी 50 ब्र इंपोर्ट होता है इस सड़क को काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च सेंट्रल रोड रिसर्च इंस्टिट्यूट , नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया और प्राज इंडस्ट्रीज ने मिलकर तैयार किया है। प्राज इंडस्ट्रीज ने ही लिग्निन आधारित टेक्नोलॉजी से बायो-बिटुमेन तैयार किया है। लिग्निन पौधों में पाया जाने वाला एक तरह का कॉम्प्लेक्स पॉलिमर (रेशा) है।

टेस्ट में टॉप ऑर्डर को... रविंद्र जडेजा ने रोहित-कोहली के लिए कह दी ये बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के स्टार ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने शनिवार को कहा कि टॉपक्रम के रन नहीं बना पाने से निचलेक्रम पर दबाव बनता है।

जडेजा ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में बॉक्सिंग डे टेस्ट में बल्लेबाजों से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वर्षाबाधित ब्रिसबेन टेस्ट में जडेजा ने पहली पारी में 77 रन बनाकर ड्रॉ कराने में अहम भूमिका निभाई।

जडेजा ने एमसीजी पर बातचीत के दौरान कहा कि, भारत के बाहर खेलने पर टॉप क्रम के रन काफी अहम है खासकर ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में। जब टॉप क्रम रन नहीं बनाता है तो निचले क्रम पर दबाव बन जाता है। उन्होंने कहा कि, उम्मीद है कि इस टेस्ट में टॉप क्रम और मध्यक्रम अच्छे रन बनाएगा।

हमें टॉप क्रम से अच्छे प्रदर्शन की जरूरत है। अगर बल्लेबाजों में सभी योगदान देंगे तो टीम का प्रदर्शन बेहतर होगा। ब्रिसबेन के गाबा स्टेडियम में केएल राहुल (84) को छोड़कर भारत के टॉप क्रम के बल्लेबाज कुछ खास नहीं कर सके। पहले दो टेस्ट से बाहर रहे जडेजा को गाबा में मौका दिया गया था। जडेजा ने कहा कि पहले दो टेस्ट से बाहर रहने से उन्हें हालात के अनुकूल ढलने और गाबा टेस्ट की तैयारी का सम मिल गया।

लिस्ट ए क्रिकेट में सबसे तेज शतक बनाने वाले भारतीय बने

अहमदाबाद (एजेंसी)। पंजाब के अनमोलप्रीत सिंह ने विजय हजारे एक दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट के ग्रुप सी में अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ केवल 35 गेंद पर शतक जड़ा जो लिस्ट ए क्रिकेट में सबसे तेज शतक का भारतीय रिकॉर्ड है। अनमोलप्रीत की इस तूफानी पारी की बदौलत पंजाब ने अरुणाचल प्रदेश को नौ विकेट से करारी शिकस्त दी। अनमोलप्रीत को पिछले महीने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की नीलामी में कोई खरीदार नहीं मिला था लेकिन अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ उन्होंने अपने आक्रामक तेवरों का खुलकर प्रदर्शन करते हुए पूर्व भारतीय ऑलराउंडर यूसुफ पठान का रिकॉर्ड तोड़ा।

जिन्होंने 2009-10 में बड़ौदा की तरफ से महाराष्ट्र के खिलाफ 40 गेंद पर शतक लगाया था। अगर विश्व रिकॉर्ड की बात करें तो अनमोलप्रीत की पारी लिस्ट ए में सबसे तेज शतकों की सूची में तीसरे नंबर पर है। रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के जेक-फ्रेजर मैकगर्क के नाम पर है जिन्होंने 2023 24 में दक्षिण ऑस्ट्रेलिया की तरफ से तस्मानिया के खिलाफ केवल 29 गेंद पर शतक जड़ दिया था। उनके बाद दक्षिण अफ्रीका के एबी डिविलियर्स का नंबर आता है जिन्होंने 2014-15 में वेस्टइंडीज के खिलाफ जोहानिसबर्ग में 31 गेंद पर शतक बनाया था।

दाएं हाथ के बल्लेबाज अनमोलप्रीत ने 45 गेंद पर नाबाद 115 रन बनाए जिसने 12 चौके और नौ छक्के शामिल हैं। उनकी इस पारी की मदद से पंजाब ने केवल 12.5 ओवर में 165 रन का लक्ष्य हासिल कर दिया। पंजाब ने एक विकेट पर 167 रन बनाए। कप्तान अभिषेक शर्मा (10) के जल्दी आउट होने के बाद अनमोलप्रीत ने प्रभसिमरन सिंह (नाबाद 35) के साथ दूसरे विकेट के लिए 153 रन की अटूट साझेदारी करके टीम को आसान जीत दिलाई। इससे पहले अरुणाचल प्रदेश की टीम 164 रन

विराट कोहली का नया हेयरस्टाइल देखा क्या?

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली किसी न किसी कारण अक्सर चर्चाओं में रहते हैं। मौजूदा समय में वह भारतीय टीम के साथ ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर हैं। जहां उन्होंने पहले टेस्ट में शतकीय पारी खेली लेकिन उसके बाद के टेस्ट मैचों में उनका बल्ला शांत रहा। वहीं भारतीय टीम मेलबर्न पहुंच गई है जहां उसे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 26 दिसंबर से बॉक्सिंग डे टेस्ट खेलना है। साथ ही विराट कोहली ने बॉक्सिंग डे से पहले अपना हेयरस्टाइल चेंज किया है, जो की सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। मेलबर्न टेस्ट से पहले विराट कोहली ने नया लुक अपनाया है। हेयरस्टाइलिस्ट जॉर्डन टैबकमैन द्वारा हाल ही में एक वीडियो शेयर किया गया है। जिसमें वह कोहली का एक शानदार हेयर मेकओवर करवाते हुए दिख रहे हैं। विराट कोहली ज्यादातर बार मुंबई में अपने पसंदीदा हेयर स्टाइलिस्ट आलिम हकीम से हेयरकट करवाते हुए नजर आ रहे हैं। लेकिन इस बार वह मेलबर्न में द बार्बर क्लब पोर्ट गए, जहां उन्होंने स्टाइलिस्ट जॉर्डन तबाकमैन से अपना हेयरकट करवाया है। सोशल मीडिया पर विराट कोहली के नए हेयरस्टाइल को लोग काफी पंसद कर रहे हैं। जॉर्डन ने वीडियो शेयर करते हुए कैप्शन लिखा कि, किंग्स का नया क्राउन, विराट कोहली हमेशा मिलकर अच्छा लगता है। सोशल मीडिया पर फैंस और फॉलोअर्स ने कोहली के नए लुक की काफी तारीफ की है।

भारत करेगा आईएसएसएफ जूनियर विश्व कप 2025 की मेजबानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत को अगले साल के जूनियर विश्व कप की मेजबानी का अधिकार दिया गया है जिसमें राइफल, पिस्टल और शॉटगन की प्रतियोगितायें शामिल हैं। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। भोपाल में 2023 में सीनियर विश्व कप और इस साल की शुरुआत में सत्र के अंत में हुए विश्व कप फाइनल के बाद यह हाल के दिनों में देश का तीसरा शीर्ष अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) का टूर्नामेंट होगा जिससे दुनिया में खेल के शीर्ष स्थलों में से एक के रूप में भारत की प्रतिष्ठा मजबूत होगी।हालांकि टूर्नामेंट की तारीखों को अभी अंतिम रूप दिया जाना बाकी है। एनआरएआई द्वारा आईएसएसएफ से आधिकारिक पुष्टि प्राप्त करने के बाद प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय महासंघ के अध्यक्ष कलिकेश नारायण सिंह देव ने कहा, ''पिछले महीने रोम में आईएसएसएफ की कार्यकारी समिति की एक सार्थक बैठक हुई थी और सभी सदस्य महासंघों के अलावा आईएसएसएफ अध्यक्ष लुसियानो रॉसी ने भारत की शीर्ष अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने और खेल को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने में मदद करने के तरीके की प्रशंसा की थी।'' उन्होंने कहा, ''हमें तब इसका अहसास हुआ था, लेकिन अब जब आधिकारिक पुष्टि हो गई है तो हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित हैं।'' एनआरएआई के महासचिव सुल्तान सिंह ने कहा, ''आईएसएसएफ ने अपने पत्र में हमसे दो संभावित समय की पुष्टि करने का अनुरोध किया है जिसमें एक सितंबर-अक्टूबर में और दूसरा अक्टूबर के अंत तथा नवंबर की शुरुआत के दौरान है। हम आंतरिक रूप से बैठक के बाद जल्द उनके साथ इसे साझा करेंगे ताकि सदस्य महासंघ इसके अनुसार तैयारी कर सकें।'' इससे पहले भारत ने दो महाद्वीपीय चैंपियनशिप और छह आईएसएसएफ प्रतियोगिताओं की मेजबानी की थी जिसमें दो विश्व कप फाइनल प्रतियोगितायें और चार सीनियर आईएसएसएफ विश्व कप शामिल हैं।

बॉक्सिंग डे टेस्ट में शुभमन गिल की होगी अग्निपरीक्षा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। सीरीज के शुरुआती तीन मैच खेले जा चुके हैं। पर्थ में खेला गया पहला टेस्ट भारत ने जीता जबकि उसके बाद एडिलेड टेस्ट में उसे हार झेलनी पड़ी तो गाबा टेस्ट ड्रॉ रहा। वहीं भारतीय बल्लेबाज इस सीरीज में अभी तक फेल रहे हैं, वह उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सके हैं। साथ ही टीम के स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल की फॉर्म भी टीम के लिए चिंता का विषय बन गई है, आखकर एशिया के बाहर उनके आंकड़े मायूस करते हैं।

भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली और रविंद्र जडेजा जैसे अनुभवी खिलाड़ी कुछ ही मैचों में भारत के लिए टेस्ट में खेलते हुए नजर आएंगे। जिसके बाद शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल जैसे युवा खिलाड़ियों पर टीम को संभालने की जिम्मेदारी होगी। गिल में सभी को भविष्य की झलक दिखती है और यही कारम है कि उन्हें टीम में लगातार मौके मिलते रहते हैं। लेकिन 2022 के बाद से एशिया के बाहर उनका प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है। गिल ने 2021 ब्रिसबेन टेस्ट के बाद से 16 पारियों में 17.80 की औसत से 267 रन बनाए हैं। उनका बेस्ट स्कोर 36 रन रहा है। 2021 में गिल ने 146 गेंदों में 91 रन की दमदार पारी खेली थी लेकिन उसके बाद से उनके बल्ले से रन नहीं निकले हैं।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जारी टेस्ट सीरीज में शुभमन गिल भारत के लिए तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी कर रहे हैं लेकिन तीन पारियों में वह उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। पर्थ में खेला गया पहला टेस्ट गिल ने नहीं खेला था।

मुश्किल में फंसे रॉबिन उथप्पा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेट रॉबिन उथप्पा बड़ी मुश्किल में फंस गए हैं। दरअसल, ईपीएफओ धोखाधड़ी मामले में उनके खिलाफ अरेस्ट वारंट जारी हुआ है। ढ्ढहस्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक, रॉबिन उथप्पा पर सेंचुरी लाइफस्टाइल ब्रांड-प्राइवेट लिमिटेड का प्रबंधन करते समय कर्मचारियों के वेतन से 23 लाख की कटौती करने उनके भविष्य निधि योगदान को जमा करने में फेल रहने के आरोप हैं। कहा जा रहा है कि दिसंबर की शुरुआत में उथप्पा के खिलाफ वारंट जारी कर दिया गया था लेकिन वह अपने घर पर नहीं थे जिस कारण से वह वापस कर दिया गया। द हिंदू की रिपोर्ट के अनुसार, वारंट पीएफ रिजनल कमिश्नर शदाक्षरी गोपाल रेड्डी द्वारा जारी किया गया था, जिन्होंने कर्नाटक में पुलकेशिनगर पुलिस क्षेत्राधिकार को आवश्यक कार्रवाई करने के लिए कहा है। अधिकारियों ने कहा कि, 4 दिसंबर को जारी किया गया वारंट वापस कर दिया गया है क्योंकि उथप्पा पुलकेशिनगर निवास पर नहीं पाए गए थे।

पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज और उनका परिवार कथित तौर पर दुबई में रहता है। वारंट में कहा गया है कि बकाया राशि का भुगतान न करने के कारण कार्यालय प्रभावित कर्मचारियों के पीएफ खातों का निपटान नहीं कर पाया। इसने पुलिस को रॉबिन उथप्पा को गिरफ्तार करने और 27 दिसंबर तक वारंट वापस करने का निर्देश दिया।

आईओए के मामले सुलझाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं-जूनियर खेल मंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। युवा मामले और खेल राज्य मंत्री रक्षा निखिल खडसे ने यहां कहा कि सरकार 2036 ओलंपिक खेलों के लिए मजबूत और सफल बोली सुनिश्चित करने के लिए भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) में मतभेदों को सुलझाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। आईओए अध्यक्ष पीटी उषा का कार्यकारिणी के उन 12 सदस्यों के साथ तनातनी चल रही है जिन्होंने रघुराम अय्यर की आईओए के सीईओ के रूप में नियुक्ति को मंजूरी नहीं दी है। इससे भारत की अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आइओसी) के सामने अच्छी छवि पेश नहीं हो रही है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत 2036 में होने वाले ओलंपिक खेल और पैरालंपिक खेलों की मेजबानी की दौड़ में शामिल है। भारत ने खेलों की मेजबानी करने के लिए आईओसी के भविष्य के मेजबान आयोग को आशय पत्र सौंप दिया है। अंतरराष्ट्रीय संस्था के साथ कई बार की बातचीत के बाद भारत ने यह महत्वपूर्ण कदम उठाया।

अनमोलप्रीत सिंह का कारनामा, 35 गेंदों में ठोका तूफानी शतक, यूसुफ पठान का ये रिकॉर्ड तोड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। विजय हजारे ट्रॉफी का आगाज हो गया है, जहां पहले ही मैच में पंजाब के अनमोलप्रीत सिंह ने बड़ा कारनामा कर दिया है। दरअसल, अनमोलप्रीत सिंह सबसे तेज लिस्ट ए शतक लगाने वाले भारतीय बन गए हैं। उन्होंने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम ग्राउंड ए में अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ ये उपलब्धि हासिल की है।

अनमोलप्रीत ने अरुणाचल प्रदेश के गेंदबाजों की जमकर धुनाई की। उन्होंने 12 चौकों और 9 छक्कों की मदद से पंजाब को 9 विकेट से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। अनमोलप्रीत ने सिर्फ 35 गेंदों में शतक पूरा किया। लिस्ट ए में ये तीसरा सबसे तेज शतक है। ऑस्ट्रेलिया के जेक फ्रेजर-मैकगर्क और दक्षिण अफ्रीका के एबी डिविलियर्स इस लिस्ट में पहले और दूसरे स्थान पर मौजूद हैं। जेक ने 29 गेंद में और एबी डिविलियर्स इस लिस्ट में पहले

और दूसरे स्थान पर मौजूद हैं। जेक ने 29 गेंद में और एबी ने 31 गेंदों में शतक ठोका था। इससे पहले किसी भारतीय द्वारा बनाया गया सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड यूसुफ पठान के नाम था, उन्होंने 2009-10 में विजय हजारे ट्रॉफी में महाराष्ट्र के खिलाफ बड़ौदा की ओर से खेलते हुए 20 गेंदों में शतक बनाया था। पंजाब को 50 ओवर में 165 रनों का लक्ष्य हासिल करना था और अनमोलप्रीत सिंह ने ज्यादातर रन बनाए। अनमोलप्रीत सिंह ताबड़तोड़ शॉट खेलते हुए नजर आए। उन्होंने 35 गेंद में अपना शतक पूरा किया और 115 रन बनाकर नाबाद लौटे। पंजाब ने 12.5 ओवर में ही लक्ष्य को हासिल कर लिया।

तेंदुलकर ने गांव की बच्ची के गेंदबाजी एक्शन की तारीफ की, जहीर भी हुए कायल

नई दिल्ली (एजेंसी)। महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने सोशल मीडिया पोस्ट में गांव की एक बच्ची के शानदार गेंदबाजी एक्शन की तारीफ करके भारत के पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान से उनकी तुलना की और जहीर भी उसकी तकनीक के कायल हुए बिना नहीं रहे। तेंदुलकर ने शुक्रवार को एक्स पर राजस्थान की सुशीला मीना का वीडियो साझा किया जो बायें हाथ से शानदार तेज गेंदबाजी कर रही थी और उसके बेहतरीन एक्शन में जहीर के एक्शन की झलक मिल रही थी। तेंदुलकर ने जहीर को वीडियो में टैग किया।

उन्होंने लिखा ,'' शानदार। देखने में मजा आया। सुशीला मीना के गेंदबाजी एक्शन में तुम्हारी झलक है जहीर। क्या तुम्हे भी लगता है।'' जवाब में जहीर ने लिखा ,'' बिल्कुल। मैं भी सहमत हूं। इसका एक्शन इतना प्रभावी और शानदार है। काफी प्रतिभावान लग रही है।''

राजस्थान के प्रतापगढ जिले के छोटे से गांव रामेर तालाब पिपलिया की रहने वाली 12 वर्ष की सुशीला पांचवीं कक्षा की छात्रा है और क्रिकेट की शौकीन है। उनका गेंदबाजी एक्शन खासकर गेंद फेंकने से पहले कूदना जहीर की गेंदबाजी शैली की याद दिलाता है। तेंदुलकर और जहीर के बीच सोशल मीडिया की इस बातचीत पर अब तक लाखों व्यूज आ चुके हैं और कारपोरेट जगत से सुशीला की ट्रेनिंग के लिये मदद का प्रस्ताव भी आया है।

नवीन बस स्टैंड में बसों से पुलिस की अवैध एंट्री वसूली

प्रति दिन एक वाहन का 100 रुपए फिक्स, इसके अलावा महीने का देना होता है एक हजार रुपए

बस स्टैंड में हर रोज करीब 500 बसों की होती है एंट्री, पाठक जी बनाते हैं एंट्री का मैनेजमेंट

आरटीओ के काम में दखलंदाजी कर पुलिस स्टाफ लाखों का करता है खेल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। समान थाना इलाके में संचालित नवीन बस स्टैंड इन दिनों आरटीओ से इतर होकर पुलिस की अवैध वसूली का अड्डा बना हुआ है जहां पुलिस के कर्मचारी प्रति दिन एक बस से 100 रुपए की एंट्री वसूली प्राप्त कर रहे हैं जिसमें करीब 500 बसें पुलिस वाले साहब की जद में आती हैं जहां से रोज का करीब 50 हजार रुपए अवैध कमाई के रूप में विभाग में बंटवारा किया जाता है।

दिन का 50 हजार का खेल:बताया जा रहा है कि 50 हजार रुपए प्रति दिन के हिसाब से महज बस स्टैंड से ही महीने का 15 लाख रुपए का खेला पुलिस के कर्मचारी करते हैं जिसमें मुख्य रूप से पाठक जी का अहम रोल होता है जिनके द्वारा प्रत्येक बस संचालकों से यह रकम वसूल की जाती है। तथा वसूली गई इस रकम को वह अपने पास ही समेटकर रखते हैं जिससे उन्हें एसी वाहन में चढ़ने की सहूलियत मिलती है। वहीं इतना ही नहीं पुलिस वाले साहब जी इस 15 लाख रुपए के अतिरिक्त प्रति बस महीने का 1000 हजार रूपये अलग से एंट्री वसूली का काम करते हैं तथा इस राशि को विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुंचाया जाता है जो करीब 500 बसों का मिलाकर करीब 5 लाख तक होती है।

बस अड्डा बना वसूली केंद्र: दरअसल नवीन बस स्टैंड विगत लंबे समय से पुलिस के अवैध वसूली का अड्डा बना हुआ है जहां पर बसों के अलावा भी पुलिस के कर्मचारी दुकानदारों को डरा धमकाकर उनसे ही महीने की सेटिंग बनाए बैठे हैं तथा बस संचालकों का मैनेजमेंट उनकी बची हुई कमाई में शामिल हो जाता है। सूत्र बताते हैं कि बस स्टैंड के भीतर संचालित चाय और पान की गुमटियों में पुलिस के कर्मचारियों का ऐसा मैनेजमेंट बनता है कि यहां से अवैध मादक पदार्थों की बिक्री भी कराई जाती है तथा साहब लोग दुकानदारों को संरक्षण देकर उनसे मोटी रकम वसूल करते हैं। साथ ही बस मालिकों की सेटिंग से आय में वृद्धि होती है।

आरटीओ को बस स्टैंड में चेकिंग की मनाही

सूत्र बताते हैं कि बस स्टैंड में पुलिस विभाग की सेटिंग को डिस्टर्ब करने का पावर आरटीओ विभाग के पास भी नहीं है क्योंकि यह पहले से ही तय कर दिया गया है कि आरटीओ विभाग का कोई कर्मचारी बस स्टैंड के भीतर किसी भी तरह की कोई कार्यवाही नहीं करेगा जिससे पुलिस वाले साहब का महीने का मैनेजमेंट सुचारू ढंग से संचालित होता रहे जिसके चलते आरटीओ विभाग कभी भी बस स्टैंड के भीतर वाहनों पर कार्यवाही करने का रिश्क नहीं उठाता हालांकि आरटीओ सेटिंग तो कैसे भी बनी हुई है जहां बस स्टैंड से बाहर ही उनके पास भी महीने की राशि पहुंच जाती है जिसके कारण वह भी कार्यवाही से कतराते रहते हैं।

क्या कहते हैं जानकार

जानकार बताते हैं कि बसों से एंट्री करने वाले पाठक साहब अपनी तगड़ी सेटिंग बनाए हुए हैं जिसमें वह प्रति बस एक दिन का जो 100 रुपए महीना वसूल करते हैं उन्हें इसके लिए कुछ खास मेहनत नहीं करनी पड़ती तथा एक दुकान में ही दुकानदार ने बाकायदा उनका रजिस्टर मेंटेन किया हुआ है जो समय पर उन तक वसूली गई राशि को पहुंचाने का काम करता है तथा प्रतिदिन की वसूली गई रकम का कोई हिस्सेदार भी नहीं रहता।

रीवा-प्रयागराज हाईवे पर फिर हादसा, चालक घायल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा-प्रयागराज हाईवे पर एक बार फिर सड़क हादसा हुआ है। एक तेज़ रफ्तार ट्रक ,ब्रेक फेल हो जाने के कारण अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसा सोहागी घाटी में टोल प्लाज़ा के समीप शनिवार दोपहर में हुआ। घटना के संबंध में सोहागी थाना प्रभारी पवन शुक्ला ने बताया कि सोहागी घाटी में बने टोल प्लाज़ा से पहले एक ट्रक जो रीवा से प्रयागराज की ओर सीमेंट लोड करके जा रहा था, और अचानक ब्रेक फेल हो जाने के कारण पलट गया। हादसे में ट्रक चालक गंभीर रूप से घायल हुआ है। जिसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती करा दिया गया है। बता दें कि हादसों को लेकर सोहागी घाटी डेंजर ज़ोन बन चुका है। यहां रोज़ाना सड़क हादसे हो रहे हैं, इसके बावजूद जिम्मेदार इसके बचाव में कोई कारगर क़दम नहीं उठा रहे हैं।

रूम हीटर से लगी आग की चपेट में आने से वृद्धा की मौत

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। ठंड से बचने के लिए रूम हीटर का उपयोग कर रही एक 90 वर्षीय महिला की आग की चपेट में आने से मौत हो गई। दुर्घटना मऊगंज ज़िले के देवतालाब थाना क्षेत्र के जुड़मनिया गांव की है। बताया गया कि बीती रात करीब 3 बजे हुए इस हादसे में महिला को गंभीर अवस्था में अस्पताल लाया गया जहां उसकी मौत हो गई। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि 90 वर्षीय ललिता तिवारी अपने कमरे में सो रही थी। जहां रूम हीटर भी लगा हुआ था इस दौरान अचानक रजाई में आग लगने के कारण महिला आग में झुलसने लगी। जब तक परिजन मौके पर पहुंचे आग विकराल रूप ले चुकी थी, किसी तरह आग को बुझाया गया और महिला को अस्पताल लेकर आए। तब तक उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस के द्वारा मर्ग कायम कर शव का पीएम कराया गया।

महिला को लगी ऑनलाइन सट्टा खेलने की लत

अनसुनी शिकायतों से प्रताड़ित पति ने परेशान होकर खाया जहर

जहर की 25 गोलियां खाकर अस्पताल पहुंचा पत्नी से परेशान पति

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विंध्य के सबसे बड़े अस्पताल से शनिवार को एक अजीबोगरीब मामला सामने आया जहां अपनी पत्नी से परेशान पति ने आत्मघाती कदम उठाते हुए जहर की गोलियों का सेवन कर लिया जिसके बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां पर अब उसकी स्थित नॉर्मल हुई है। बताया जा रहा है कि जहर का सेवन करने वाले युवक की पत्नी को ऑनलाइन सट्टे की लत लगी है जिसकी वजह से पत्नी हर रोज पैसे को लेकर घर में बवाल करती है तथा कई वर्षों से उसने ऑनलाइन सट्टे में करोड़ों रुपए गवाए भी है जिसकी वजह से परेशान पति ने यह आत्मघाती कदम उठाया है।

जानकारी के मुताबिक शहर के अमहिया थाना क्षेत्र स्थित नरेंद्र नगर के निवासी मोहित सिन्हा ने शुक्रवार की रात जहर का सेवन कर लिया जिसके बाद घटना की जानकारी परिजनों को लगी तब उसे आनन फानन में संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां डॉक्टरों ने उसका इलाज किया। इलाज के बाद जब युवक की हालत नॉर्मल हुई तो उसने जो खुलासा किया उसे सुनकर लोग दंग रह गए।

दरअसल जहर खाने वाले युवक मोहित सिन्हा की शादी वर्ष 2015 में हुई थी जिसके बाद करीब 3 सालों तक सब नॉर्मल ही रहा तथा कुछ दिन बाद अचानक से उसकी पत्नी को ऑनलाइन सट्टे की लत लग गई जिसपर वह अपने पति के पैसे का दुरुपयोग करने लगी जिसके कारण घर में दोनों का विवाद होने लगा तथा विवाद इतना बढ़ गया कि पत्नी ने अपने पति की पुलिस में शिकायतें करना शुरू कर दी और वह अपने पति से अलग रहने लगी।

पीड़ित का आरोप है कि उसके खिलाफ पुलिस में जो शिकायतें की गई थीं उसपर उसने अपनी तरफ से भी शिकायतें की मगर कही भी उसकी सुनवाई नहीं हुई और पत्नी अपने मायके वालों के साथ मिलकर लगातार उसे प्रताड़ित करती रही जिससे तंग आकर युवक को यह आत्मघाती कदम उठाना पड़ा।

बाइक और पिकअप वाहन की टक्कर में एक युवक की मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के सिविल लाइन थाना क्षेत्र के ढेकहा तिराहे में बीती रात बाइक और पिकअप वाहन की टक्कर में एक युवक की मौत हो गई। वहीं इस घटना में वार्ड क्रमांक चार के पार्षद भी गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना शुक्रवार रात करीब एक बजे की बताई जा रही है। परिजनों के मुताबिक देर रात मंडी से बाइक में सवार होकर पार्षद वार्ड क्रमांक चार के , दारा सिंह अपने साथी भैयन कोल व एक अन्य के साथ वापस चोरहटा थाना क्षेत्र के खैरा बस्ती अपने घर की ओर जा रहे थे। तभी तेज़ रफ्तार पिकअप वाहन से टक्कर हो गई। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची ओर घायलों को उपचार के लिए अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने भैयन कोल को मृत घोषित कर दिया। वहीं दारा सिंह की हालत गंभीर बनी हुई है। जबकि एक अन्य युवक को उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है।

तेज रफ्तार बस ने बाइक सवार को मारी टक्कर, अधेड़ की मौके पर मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सिरमौर थाना क्षेत्र में शनिवार को यात्री बस ने मोटरसाइकिल सवार अधेड़ को जोरदार ठोकर मार दी जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस की टीम ने तत्काल मृतक के शव को पीएम के लिए भेज दिया। बताया जा रहा है कि मनगवां थाना क्षेत्र के दुग्गांवा निवासी कमलेश दुबे उम्र 65 वर्ष अपनी बेटी से मिलने के लिये जा रहे थे। बाइक से वो अतरैला की ओर जा रहे थे तभी देव ट्रेवल्स की बस से उनकी आमने सामने जोरदार टक्कर हो गई जिससे उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया। हादसे में बस सबार यात्रियों को कोई छती नही पहुँची है। टक्कर के चलते बाइक सबार व्यक्ति रोड में जा गिरा टक्कर इतना ज़ोर का था की बाइक काफ़ी दूर जा गिरी जिससे घटना स्थल में ही उसकी मृत्यु हो गई। मृतक के शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए सिविल अस्पताल में रखवा दिए गया था मृतक की पहचान कमलेश दुबे निवासी दुग्गवा के तौर पर हुई है।

दरअसल, देव बस सर्विस की एक बस सिरमौर से रीवा की तरफ जा रही थी. रास्ते में सिरमौर पहुँचते ही बस ने अपने काबू खो दिया और सामने से आ रही बाइक को ठोकर मारते हुए घटना से दूर जा खड़ी हुई. यह हादसा इतना भयानक रहा कि बाइक पर सवार व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई. हादसे में बस के अंदर बैठे यात्री बुरी तरह से घबरा गए थे . हादसे के बाद पुलिस को खबर दी गई जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची. मृतक के शवों का पोस्टमॉर्टम कराया गया व पहचान उपरांत शव को परिजनो के सुपुर्द कर विवेचना में लिया गया है ।

बताया जा रहा है कि मनगवां थाना क्षेत्र के दुग्गवा निवासी कमलेश दुबे उम्र 65 वर्ष अपने किसी काम से मोटर साइकिल वाहन में सवार होकर अतरैला की ओर जा रहे थे तभी देव ट्रेवल्स की बस से उनकी आमने सामने जोरदार टक्कर हो गई जिससे उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

पति की मौत के बाद पत्नी ने की स्पर्म की डिमांड

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पति की मौत के बाद पत्नी द्वारा पुलिस प्रशासन से बेहद ही हैरान कर देने वाली डिमांड रखी गई है। दो दिन पूर्व सड़क हादसे में हुई पति की मौत के बाद पत्नी ने रीवा पहुंचने के बाद पुलिस को आवेदन पत्र देकर पति के स्पर्म की डिमांड रखी। लेकिन मौत के 24 घंटे से भी अधिक का समय बीत जाने के बाद डॉक्टर ने स्पर्म प्रिज़र्व करने से हाथ खड़े कर दिए। इसके बाद पत्नी ने अस्पताल परिसर में ही जमकर हंगामा किया। मामले में जहां डॉक्टरों का कहना है कि 24 घंटे से भी अधिक का समय बीत जाने के बाद स्पर्म प्रिज़र्व करना मुमकिन नहीं है। साथ ही रीवा मेडिकल कॉलेज में इस प्रक्रिया को करने की सुविधा और संसाधन भी नहीं हैं। वहीं मृतक की पत्नी ने ,पति की मौत के बाद ही सूचना देकर स्पर्म प्रिज़र्व करने की मांग करने की बात कहकर लापरवाही करने का आरोप लगाया है। बतादें कि गुरुवार की रात रीवा शहर के बछिया थाना क्षेत्र स्थित पुलिस लाइन के समीप चौराहे में एक बाइक एक्सीडेंट में सीधी ज़िले के चुरहट निवासी जितेंद्र सिंह गहरवार की मौत हो गई थी। पुलिस ने मामले में शव को क़ब्ज़े में लेकर पीएम के लिए संजय गांधी अस्पताल पहुंचाया लेकिन हादसे के वक्त शहर से बाहर होने के कारण पत्नी ने फोन के माध्यम से शव का पीएम कराने से मना कर दिया था, इसके बाद पुलिस, मृतक की पत्नी का रीवा आने का इंतज़ार करती रही और जब वो रीवा पहुंची तो उन्होंने एक बेहद ही अजीबो ग़रीब डिमांड रख दी।

प्रभारी मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल आज आएंगे

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा श्रम मंत्री और जिले के प्रभारी मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल दो दिवसीय प्रवास पर 22 दिसम्बर को रेवांचल एक्सप्रेस द्वारा प्रातः 8 बजे रीवा पहुंचेंगे। प्रभारी मंत्री जी का प्रातः 8.15 बजे से प्रातः 11.35 बजे तक का समय आरक्षित रहेगा। पटेल प्रातः 11.40 बजे कालेज चौराहा स्थित राजेन्द्र मिश्रा के निवास पहुंचेंगे तथा दोपहर 12.25 बजे अनंतपुर में राजेश पाण्डेय के निवास पर स्वर्गीय केशव पाण्डेय जी को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। प्रभारी मंत्री अपरान्ह एक बजे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित बलदेव सभागार में विन्ध्य की उड़ान एवं विन्ध्य विस्तार सम्मान 2024 कार्यक्रम में शामिल होंगे।

लोकायुक्त रीवा ने मझौली में नायब तहसीलदार को रिश्वत लेते पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सीधी ज़िले के मझौली में पदस्थ नायब तहसीलदार बालमीक साकेत को 25 हज़ार रुपये की रिश्वत लेते हुए लोकायुक्त रीवा की टीम ने रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। नायब तहसीलदार ने ये रकम नामांतरण के लिए मांगी थी। लोकायुक्त डी एस पी प्रवेंद्र सिंह ने बताया है कि बीते 19 दिसंबर को शिकायतकर्ता प्रवेश शुक्ल ने लोकायुक्त कार्यालय रीवा में आकर शिकायत दर्ज कराई थी। बताया कि मझौली में पदस्थ नायब तहसीलदार बालमीक प्रसाद साकेत द्वारा उनकी ज़मीन का नामांतरण करने के एवज़ में 50 हज़ार रुपये मांगे जा रहे हैं। शिकायत के सत्यापन के दौरान इसकी पुष्टि हुई। शिकायतकर्ता द्वारा 7 हज़ार रुपये बतौर एडवांस दिए गए थे। जिसके बाद आज 25000 की राशि लेते हुए रंगे हाथों उन्हें ट्रैप कर लिया गया। ट्रैप की ये कार्रवाई लोकायुक्त रीवा की 12 सदस्यीय टीम द्वारा सीधी ज़िले के मझौली में की गई।

उप मुख्यमंत्री ने रीवा एयरपोर्ट से रिंग रोड तक कनेक्टिंग रोड का किया भूमिपूजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने रीवा एयरपोर्ट से रिंग रोड तक 650 मीटर लम्बाई की कनेक्टिंग रोड का भूमिपूजन किया। यह सड़क 3.5 करोड़ रुपए की लागत से फोरलेन बनाई जाएगी। इसमें लैण्डस्केपिंग भी की जाएगी। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि पूरी गुणवत्ता के साथ नियत समय पर सड़क का निर्माण पूरा कराएं। इसके साथ ही सड़क के डिवाइडर में फूल-पौधे लगाकर इसको आकर्षक भी बनाएं। भूमिपूजन अवसर पर पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी, अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय सहित जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे। एयरपोर्ट अथारिटी रीवा के असीम मण्डल, शुभम शर्मा, नवनीत चौधरी, शुभम सिंह सहित बड़ी संख्या में स्थानीय जन व विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री ने विभिन्न कंपनियों में चयनित युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि युवाओं को विभिन्न अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें स्वाबलंबी बनाना है। युवा पीढ़ी बेहतर से बेहतर करना चाहती है। जरूरत इस बात की है कि उन्हें अवसर मिले जिसका लाभ लेकर वह सफलता की नित नई ऊंचाईयाँ छू सकें। उप मुख्यमंत्री ने टीआरएस महाविद्यालय रीवा में विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना के तहत विभिन्न कंपनियों में चयनित युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर डेक्कन मैनेजमेंट पुणे व महाविद्यालय के बीच एमओयू भी हुआ। ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात की सुनिश्चितता है कि छात्रों को अध्ययन के समय ही रोजगार के अवसर के बारे में जानकारी दी जाए। टीआरएस महाविद्यालय में इस कार्य की शुरूआत की जा चुकी है। जिले के सभी महाविद्यालयों में विभिन्न कंपनियों को बुलाकर छात्रों का कैम्पस चयन का मौका दिलाया जाए साथ ही उनके द्वारा स्वरोजगार से संबंधित सेमिनार आयोजित कराए जाएं जिनका लाभ छात्रों को मिल सके। शुक्ल ने कहा कि कालेज चौराहे में आईटी पार्क का निर्माण प्रारंभ हो रहा है जहाँ देश की बड़ी-बड़ी कंपनियों के कार्यालय होंगे। हमारा प्रयास है कि रीवा में डेटा सेंटर बनाया जाए। हर हाथ को काम मिले तथा जिले के हर खेत को पानी मिले तभी हमारा रीवा गरीबी व बेरोजगारी से मुक्त होगा। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि आगे बढ़ने के लिए धैर्य के साथ टिके रहकर कार्य करें तभी वह तरक्की कर सकेंगे। उनकी तरक्की से ही प्रदेश व देश की तरक्की होगी। शुक्ल ने जॉब लेटर प्राप्त करने वाले चयनित युवाओं को बधाई दी। इस अवसर पर जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष पूर्व महापौर राजेन्द्र ताम्रकार ने कहा कि छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि अध्ययन के दौरान ही उन्हें स्वरोजगार के बारे में जानकारी दी जाए। टीआरएस महाविद्यालय में विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा यह बात बताई जाती है। साथ ही युवाओं को स्वरोजगार स्थापित करने व स्वाबलंबी बनने के अवसर भी उपलब्ध कराए जाते हैं। छात्राओं में आत्मबल जागृत हो तथा अच्छे वातावरण का निर्माण हो यह सब भी समन्वित प्रयास से किए जा रहे हैं। स्वागत उद्बोधन में प्राचार्य डॉ अर्पिता अवस्थी ने बताया कि महाविद्यालय में शिक्षा के साथ ही स्वरोजगार की उपलब्धता के अवसर के क्रम में गत दिनों आयोजित रोजगार मेले में एक हजार युवाओं का रजिस्ट्रेशन हुआ जिसमें से 288 चयनित किए गए। उन्होंने महाविद्यालय में विभिन्न विधाओं में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी भी दी।

कार्यक्रम में नोडल अधिकारी डॉ अच्युत पाण्डेय ने बताया कि गत तीन वर्षों में 11079 युवाओं का रजिस्ट्रेशन किया जाकर 5900 युवा विभिन्न कंपनियों में चयनित हुए साथ ही 678 छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया जिनमें से 46 छात्र स्वरोजगार की स्थापना कर चुके हैं। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने उत्थान पत्रिका का विमोचन किया। उप मुख्यमंत्री ने महाविद्यालय के कर्मचारियों व श्रमिकों को कनूनी व्यवस्था व साड़ी, ब्लेजर प्रदान किये। उन्होंने महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त छात्र सुजीत तिवारी द्वारा निर्मित बांस के ईकोफ्रेंडली उत्पादों की सराहना की तथा उनके उज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ अखिलेश शुक्ला ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ भूपेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर डक्कन मैनेजमेंट ग्रुप के पवन पाण्डेय, संजय शंकर मिश्रा, अमित तिवारी, प्रदीप गौतम सुमन सहित बड़ी संख्या में प्राध्यापक व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री आज आयेंगी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री प्रतिमा बागरी 22 दिसंबर को सतना से प्रस्थान कर दोपहर एक बजे रीवा पहुंचेगी तथा एमसीयू सभागार में आयोजित विन्ध्य विस्तार सम्मान कार्यक्रम में शामिल होंगी। बागरी दोपहर 2 बजे एपीएसयू स्टेडियम में क्रिकेट मैच के पुरस्कार वितरण में शामिल होंगी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।